पंजीयन संख्या-69904/98
डाक पंजीयन संख्या-एसएसपी/एल०डब्ल्यू०/एन०पी०/318/2014-16

कृण्वन्तुविश्वे अमृतस्य पुत्राः

आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-१६, अंक:-११, मई, सन्-२०१४, सं०-२०७१ वि०, दयानंदाब्द १९१, सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११५; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

अब आयेगा राम राज्य

नरेन्द्र के रूप में राघवेन्द्र का हुआ राज्याभिषेक

'आर्य्य लोक वार्ता' ने पहले ही कर दी थी भविष्यवाणी

भारतीय समाचार पत्रों में कदाचित् सर्वप्रथम 'आर्य लोक वार्ता' ने नरेन्द्र मोदी के दिग्विजयी अभियान की सफलता की भविष्यवाणी की थी। साक्षी है नवम्बर २०१३ का वह अंक, जिसमें 'भविष्य की अगवानी' शीर्षक सम्पादकीय के माध्यम से 'आर्य्य लोक वार्ता' ने नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने का पूर्ण विश्वास व्यक्त किया था और उक्त सम्पादकीय के साथ एक चित्र भी प्रकाशित किया था, जिसमें तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंह तथा नरेन्द्र मोदी के सम्मिलन का दृश्य था।

हमारे अनेक स्वाध्यायशील पाठक 'आर्य लोक वार्ता' की फइलें बनाकर रखते हैं। उक्त लेख में नरेन्द्र मोदी के अभियानों के कारण जो दहशत सत्ताधारी खेमों में व्याप्त हो गई थी- उसकी ओर इंगित करते हुए दक्षिण में शिवाजी के अभ्युदय के कारण तत्कालीन शासकों में व्याप्त चिन्ताओं को मुखरित करने वाले भूषण कवि द्वारा रचित एक छन्द से उसकी समता प्रदर्शित की गई थी। उस छंद का पुनर्वाचन अप्रासंगिक नहीं होगा-

अफ्जल खान जू को मार्‌यौ मैदान जामैं,
बीजापुर गोलकुंडा डार्‌यौ दराज है।
'भूषन' भनत धरासायी अंगरेज कीन्ह्यौ,
हवसी फिरंगी मारे उलटि जहाज है।
देखत मैं रुस्तम को छिन मैं खराद कियौ,
तन हेरि संगर की आवत अवाज है।
चौंकि चौंकि कहत चकता चहुँधा ते, यारौं,
लेत रहौ खबरि कहाँ लौ सिवराज है।।

वस्तुतः इस विजयश्री की पटकथा तो उसी दिन लिख गई थी- जब ४ जून २०११ को दिल्ली के रामलीला मैदान में रात्रि की नीरवता में सोये हुए शताधिक योग-साधकों और साधिकाओं पर बर्बर लाठीचार्ज किया गया, योगऋषि रामदेव और आचार्य बालकृष्ण जैसे तपस्वियों को अपमानित किया गया तथा दमनकारी नेताओं ने अपनी उक्ति 'हम दमन करना भी जानते हैं' को सत्य सिद्ध कर दिखाने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी।

ध्यान रहे, जब नारियों का शीलहरण होता है, ऋषियों मुनियों और योगियों पर अत्याचार होते हैं, भ्रष्टाचार और काली कमाई करने वालों के हाथों में शासन की बागडोर होती है, मानवता सिसकारियाँ भरती हैं और दानवता का अकाण्ड ताण्डव होता है, तो घनीभूत अंधकार की कालिमा को चीरकर आशा-विश्वास के दिवाकर का उदय होता है- जो गीता में भगवान् श्रीकृष्ण की उक्ति "यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत!" को चरितार्थ कर देता है। श्री नरेन्द्र मोदी का राज्यारोहण एक ऐसे ही रविमण्डल का उदय है।

इस रविमण्डल में चाणक्य का चातुर्य, चन्द्रगुप्त की वीरता, प्रताप का स्वाभिमान, शिवा का शौर्य, लक्ष्मी की देशभक्ति- मानों एक साथ ही नरेन्द्र मोदी में सिमट आई हैं। जौहर के भस्मकणों, हल्दीघाटी के शिलाखण्डों और खानवा पानीपत के समरांगणों, जलियाँवाला बाग के भस्मावशेषों में आज एक स्पंदन है और जागृत हो गई है भारत को विश्वगुरु बनाने की अदम्य लालसा।

भारत की एकता-अखण्डता और स्वतंत्रता का जब जब चन्द्रोदय हुआ है; उदीची दिशा से हुआ है। उदीची में ही वह गुजरात की उर्वर धरा है; जहाँ द्वारकाधीश भगवान् श्रीकृष्ण ने द्वापर युग में राष्ट्रीय एकता अखण्डता का शंख फूँका था और महाराज युधिष्ठिर का सम्राट पद पर राज्याभिषेक किया था। काल की क्रूरता से राष्ट्र की एकता के विखंडित होने पर चक्रवर्ती आर्य सार्वभौम साम्राज्य की स्थापना का अमर वैदिक संदेश महर्षि दयानन्द सरस्वती ने दिया था- गुजरात प्रान्त के मौर्वी राज्य टंकारा उनकी जन्मभूमि थी। स्वराज्य आन्दोलन को विशाल जनान्दोलन बना देने वाले सत्य-अहिंसा के महान् प्रयोक्ता मोहन दास कर्मचन्द गांधी की जन्मदायिनी धरती भी पोरवन्दर गुजरात ही थी। अंग्रेजों के जाने के बाद ५६५ देशी रियायतों के एकीकरण का दुरूह कार्य सम्पन्न कर आसेतु हिमाचल महान् भारत के निर्माता लौह पुरुष वल्लभभाई पटेल भी गुजरात के थे और आज राष्ट्र की ज्वलंत समस्याओं के समाधान का संकल्प लेकर- भ्रष्टाचारियों के चंगुल से भारत माता को मुक्त कर, भारत भूमि को विश्व गुरु के पद पर प्रतिष्ठित करने का स्वप्न देखने वाले नरेन्द्र मोदी भी गुजरात के ही हैं। सत्य यह है कि आज नरेन्द्र मोदी को जो पद प्राप्त हुआ है; वह इससे पूर्व किसी भी राष्ट्रनिर्माता को नहीं मिला।

प्रचण्ड बहुमत प्राप्त कर भारतीय संविधान द्वारा प्रदत्त शक्तियों के आधार पर सांस्कृतिक परम्पराओं की पोषक, छद्म धर्मनिरपेक्षता की केंचुल से सर्वथा मुक्त, श्यामाप्रसाद मुखर्जी, आचार्य रघुवीर, दीनदयाल उपाध्याय जैसे महा पुरुषों के सिद्धान्तों पर आधारित भारतीय जनता पार्टी के प्रतिनिधि नरेन्द्र मोदी का भारत के प्रधानमंत्री पद पर अभिषेक विक्रमादित्य, चन्द्रगुप्त मौर्य अथवा सम्राट अशोक के राज्याभिषेक से कुछ भी कम नहीं है। नरेन्द्र मोदी एक राजनेता ही नहीं हैं, विदेह की तरह एक योगी हैं।

श्री नरेन्द्र मोदी ने पदभार सँभालने से पहले ही अपनी पूजनीया वयोवृद्धा माँ हीराबेन का चरणस्पर्श कर आशीर्वाद लिया; काशी में शिवार्चन एवं गंगा स्तवन करके मातृ संस्कृति (सरस्वती) को प्रणाम किया- तत्पश्चात् राष्ट्रभाषा हिन्दी में प्रथम संबोधन द्वारा मातृभाषा (इड़ा) की वंदना की तदुपरान्त (मही) लोकसभा की दहलीज पर माथा टेककर पावन मातृभूमि का नमन किया और इस बात का सबूत दे दिया कि भारत के वे प्रथम ऐसे प्रधानमंत्री हैं- जो ऋग्वेद की इस उक्ति को आत्मसात् करते हैं-

इड़ा, सरस्वती, मही
तिस्रो देवीः मयोर्भुव।
बर्हिः सीदन्त्वस्रिधः।।

मातृभाषा, मातृसंस्कृति और मातृभूमि- ये तीन प्रमुख देवियाँ हमारे हृदयों में निरन्तर विराजती रहें।

सच तो यह है कि यह नरेन्द्र का नहीं, राघवेन्द्र का राज्याभिषेक है। यह नरेन्द्र सरकार नहीं, राघवेन्द्र सरकार है। जब राघवेन्द्र सरकार बनती है; तो रामराज्य की स्थापना होती है। वही रामराज्य जिसका विश्ववंद्य बापू ने सपना देखा था। वही रामराज्य जिसकी रूपरेखा कभी गोस्वामी तुलसीदास ने खींची थी-

फूलहिं फरहिं सदा तरु कानन। रहहिं एक सँग गज पंचानन।।
खगमृग सहज बयरु बिसराई। सबहिं परस्पर प्रीति बढ़ाई।।
कूजहिं खग मृग नाना बृंदा। अभय चरहिं बन करहिं अनंदा।।
सीतल सुरभि पवन बह मंदा। गुंजत अलि लै चलि मकरंदा।।

समता, सौमनस्य, सौहार्द, सद्भावना और सदाशयता की प्रतिष्ठा जनमानस में करनी होगी। प्रेम स्नेह और श्रमशीलता के तारों को झंकृत करना होगा। जो हो गुजरा है; उसे भुलाकर आगे बढ़ने का संकल्प दृढ़ करना होगा। 'साकेत' में राम के राज्य अभिषेक के पश्चात् श्रीराम ने जो संदेश प्रसारित किया था; राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त के शब्दों में वही संदेश हम अपने देशवासियों को पुनः स्मरण कराना चाहते हैं-

वह वर्षा की बाढ़ गई, उसको जाने दो
शुचि शालीनता शरद की प्रिय आने दो
धराधाम को रामराज्य की जय गाने दो
लगता है जो समय प्रेमपूर्वक लाने दो।

(आर्य लोक वार्ता' न्यूजडेस्क)

विनय पीयूष

स्वीकार लो नेह, आओ !

आ याहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबा इमम्।
एदं बर्हिः सदो मम।

(साम. पू. अ.2/द.8/मं. 7)

मिलो तो सही,
तुम मिलो, मिल भी जाओ !

हृदय में संजो कर
स्नेही सोम-धाग,
तुम्हारे लिये ही
किया यत्न सारा,

करो धन्य,
स्वीकार लो नेह, आओ !

काव्यानुवाद : अमृत खरे

सम्पादकीय

यशोदा : मातृशक्ति

२३ अप्रैल २०१४, दिन बुधवार को देश के प्रमुख दैनिक समाचार पत्रों के प्रातः संस्करणों ने एक छोटा सा समाचार प्रमुखता के साथ छापा, जिसका शीर्षक था- 'तीन यशोदाएँ'। समाचार में यशोदा नाम धारिणी तीन नारियों का जिक्र था; जिनमें विशिष्ट आन्तरिक समानता पाई गई थी। पहली यशोदा थीं- जैन धर्म प्रवर्तक महावीर स्वामी की पत्नी, दूसरी थी- यशोधरा सिद्धार्थ गौतम बुद्ध की पत्नी और तीसरी थी यशोदा बेन- प्रधानमंत्री पद के प्रत्याशी श्री नरेन्द्र मोदी की पत्नी। तीनों नारियों में नाम की समानता के साथ आन्तरिक समानता यह थी कि वे पवित्र और निर्दोष होते हुए भी अपने पतियों के द्वारा त्याग दी गई थीं और परित्यक्त होकर भी वे अपने पतियों की लोक प्रसिद्धि में साधक बनीं।

इन तीन यशोदाओं में दो नाम उस समय और जुड़ गये जब मैं उसी दिन सायंकाल आर्य समाज वेद मंदिर राजाजीपुरम, लखनऊ में डॉ.आनन्द वर्णवाल प्रधान आर्य समाज राजाजीपुरम की दिवंगता पत्नी यशोदा वर्णवाल की स्मृति सभा में शामिल हुआ। चतुर्थ यशोदा जी डॉ.आनन्द वर्णवाल की पत्नी थीं; जिनका निधन २०१३ में आज की ही तिथि को हुआ था। एक आदर्श गृहिणी, पत्नी तथा माता के दायित्वों का निर्वहन करती हुई; स्वाध्याय सत्संग की वैतरणी के सहारे भवसागर को जिन्होंने पार किया था और अपनी कर्त्तव्य परायणता के बल पर डॉ.आनन्द वर्णवाल को प्रशासनिक दायित्वों के समानान्तर सामाजिक सेवा में तत्पर रहने का अवकाश प्रदान किया था। डॉ.आनन्द वर्णवाल के सामाजिक सरोकारों के पीछे यशोदा जी की भूमिका को नजरंदाज नहीं किया जा सकता है। पांचवीं यशोदा जी- कृष्ण कन्हैया की माता यशोदा जी थीं; जिन्हें एक उत्कृष्ट उपमान के रूप में मैंने यशोदा वर्णवाल की स्मृति श्रद्धांजलि के रूप में कहे गये छंद की एक पंक्ति के रूप में प्रस्तुत किया था- वह पंक्ति थी- ''यशोदा के समान थीं, यशोदा देवी वर्णवाल'' साहित्यिक दृष्टि से इस एक पंक्ति में ही यमक अलंकार भी है, उपमा भी है, अनन्वय और स्मरण अलंकार भी है।

कृष्ण की माता यशोदा तो राष्ट्रमाता थीं। कृष्ण का पालन पोषण उन्होंने अपने पुत्रों से बढ़ कर किया था और दुनिया के समक्ष माता शब्द की महिमा को गौरवान्वित किया। माता याशोदा की भावनाओं का, मनोरथों का, ममत्व का असीम चित्रण करके भक्तकवि सूरदास विश्वकवि माने गये और समीक्षकों को यह कहना पड़ा कि पुरुष होते हुए भी सूरदास को मातृहृदय मिला था। बड़े भाई बलदाऊ बालकृष्ण को यह कहकर चिढ़ाते हैं कि तुमको तो यशोदा मैया ने मोल लिया है, जन्म नहीं दिया है। 'मैया मोहें दाऊ बहुत खिझायो' शीर्षक सूरसागर के प्रसिद्ध पद में माता यशोदा जी यह कहकर कृष्ण को आश्वस्त करती हैं-

सुनहु कान्ह, बलभद्र चबाई,
जनमत ही को धूत।
सूर स्याम मोंहि गोधन की सौं,
हौं माता तू पूत।।

''कान्हा सुन, तेरा भाई बलदाऊ तो जन्म का ही शरारती है, उसकी बात पर कान मत दे। मैं गोधन की सौगन्ध खाकर कहती हूँ कि मैं ही तेरी माता हूँ, और तू मेरा पुत्र है।''

यशोदा मैया और यशोदा वर्णवाल को अपने पति का वियोग नहीं झेलना पड़ा जबकि समाचार पत्रों में चर्चा का विषय बनीं अन्य तीनों यशोदाओं की स्थिति उनसे सर्वथा भिन्न है। इन तीनों यशोदाओं को उनके पतियों ने युवावस्था में ही परित्याग कर दिया तथा उच्चतर लक्ष्य की प्राप्ति हेतु वैराग्य धारण करके चले गये। तीनों यशोदाओं को जीवन पर्यन्त तिल तिलकर जलना पड़ा, वियोग का कष्ट झेलना पड़ा फिर भी तीनों यशोदाओं ने अपने संयम, साधना और तपश्चर्या के द्वारा नारी-शक्ति के महान् इतिहास की रचना की। तीनों ही महापुरुषों की सफलताओं का श्रेय इन्हीं यशोदाओं को जाता है। यशोधरा को राजकुमार सिद्धार्थ अनेक प्रतियोगिताओं में भाग लेकर उनमें विजय प्राप्त कर वरण करने में सफल हुए थे। किन्तु रात्रि के अंधेरे में जब वहीं यशोधरा अपने पुत्र राहुल को अपने कलेजे से लगाए हुए सो रही थी तो सिद्धार्थ उसे छोड़कर चले गये और पुनः उसका हालचाल पूछने तक नहीं आवे। नारी के त्याग और पुरुष की इस निर्ममता निष्ठुरता का चित्रण हिन्दी के महान् कवि मैथिलीशरण गुप्त ने 'यशोधरा' नामक एक सुन्दर काव्य में किया। यशोधरा को यही अफसोस है कि उसके पति ने उस पर भरोसा नहीं किया; उसे विश्वास के योग्य नहीं समझा। वह कहती हैं-

सिद्धि हेतु स्वामी गये, यह गौरव की बात,
पर चोरी चोरी गये, यही बड़ा आघात।
सखि, वे मुझसे कहकर जाते,
कह, तो क्या मुझको वे अपनी, पथ बाधा ही पाते!!
स्वयं सुसज्जित करके क्षण में,
प्रियतम को प्राणों के प्रण में
हमीं भेज देती हैं रण में- देश धर्म के नाते।
सखि, वे मुझसे कहकर जाते!!

निःसंदेह यशोधरा के तप-त्याग ने सिद्धार्थ को गौतम बुद्ध बना दिया; यशोधरा को कम से कम राजपरिवार की सुविधाएँ और जीवन यापन के साधन तो सुलभ थे किन्तु यशोदा बेन को तो वह भी सुलभ नहीं था। यह भी सत्य है कि जशोदा बेन के तप-त्याग ने एक चाय बेचने वाले को जन जन का हृदय सम्राट बना दिया; जिसका आज भारत जैसे महान् और विशाल राष्ट्र में अभिनन्दन हो रहा है। एक बार फिर जशोदा बेन के रूप में नारी की शक्तिमत्ता साकार हुई है। नारी जब जब अपने दैवी गुणों को धारण करती है; शक्तिसाधना और संयम की भूमिकाओं पर संचरण करती है- वह 'माता निर्माता भवति' की उक्ति को चरितार्थ करती है।

सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-१४०

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में सप्तम समुल्लास का अंश

सगुण निर्गुण उपासना

अष्टांग योग से परमात्मा के समीपस्थ होने और उसको सर्वव्यापी, सर्वान्तर्यामी रूप से प्रत्यक्ष करने के लिये जो-जो काम करना होता है वह-वह सब करना चाहिये। अर्थात्-

तत्राऽहिंसासत्याऽस्तेयब्रह्मचर्य्याऽपरिग्रहा यमाः॥

इत्यादि सूत्र पातंजलयोगशास्त्र के हैं- जो उपासना का आरम्भ करना चाहै उसके लिए यही आरम्भ है कि वह किसी से वैर न रक्खे, सर्वदा सबसे प्रीति करे। सत्य बोले। मिथ्या कभी न बोले। चोरी न करे। सत्य व्यवहार करे। जितेन्द्रिय हो। लम्पट न हो और निरभिमानी हो। अभिमान कभी न करे। ये पांच प्रकार के यम मिल के उपासना योग का प्रथम अंग है।

शौचसन्तोषतपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः॥

राग द्वेष छोड़ भीतर और जलादि से बाहर पवित्र रहै। धर्म से पुरुषार्थ करने से लाभ में न प्रसन्नता और हानि में अप्रसन्नता करे। प्रसन्न होकर आलस्य छोड़ सदा पुरुषार्थ किया करे। सदा दुःख सुखों का सहन और धर्म ही का अनुष्ठान करे, अधर्म का नहीं। सर्वदा सत्य शास्त्रों को पढ़े पढ़ावे। सत्पुरुषों का संग करे और 'ओ३म्' इस एक परमात्मा के नाम का अर्थ विचार करे नित्यप्रति जप किया करे। अपने आत्मा को परमेश्वर की आज्ञानुकूल समर्पित कर देवे। इन पांच प्रकार के नियमों को मिला के उपासना योग का दूसरा अंग

कहाता है। इसके आगे छः अंग योगशास्त्र वा ऋग्वेदादि- भाष्यभूमिका में देख लेवें।

जब उपासना करना चाहें तब एकान्त शुद्ध देश जाकर, आसन लगा, प्राणायाम कर बाह्य विषयों से इन्द्रियों को रोक, मन को नाभिप्रदेश में वा हृदय, कण्ठ, नेत्र, शिखा अथवा पीठ के मध्य हाड़ में किसी स्थान पर स्थिर कर अपने आत्मा और परमात्मा का विवेचन करके परमात्मा में मग्न होकर संयमी होवें।

जब इन साधनों को करता है तब उसका आत्मा और अन्तःकरण पवित्र होकर सत्य से पूर्ण हो जाता है। नित्य प्रति ज्ञान विज्ञान बढ़ाकर मुक्ति तक पहुँच जाता है। जो आठ प्रहर में एक घड़ी भर भी इस प्रकार ध्यान करता है वह सदा उन्नति को प्राप्त हो जाता है। वहाँ सर्वज्ञादि गुणों के साथ परमेश्वर की उपासना करनी सगुण और द्वेष, रूप, रस, गन्ध, स्पर्शादि गुणों से पृथक् मान, अतिसूक्ष्म आत्मा के भीतर बाहर व्यापक परमेश्वर में दृढ़ स्थित हो जाना निर्गुणोपासना कहाती है।

इसका फल- जैसे शीत से आतुर पुरुष का अग्नि के पास जाने से शीत निवृत्त हो जाता है वैसे परमेश्वर के समीप प्राप्त होने से सब दोष दुःख छूटकर परमेश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव के सदृश जीवात्मा के गुण कर्म स्वभाव पवित्र हो जाते हैं इसलिये परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना अवश्य करनी चाहिये। (क्रमशः)

वेदांजलि

तृतीयाश्रम (वानप्रस्थ) में प्रवेश में असमर्थ वृद्धों के कर्त्तव्य

❑ पं.शिव कुमार शास्त्री
भू.पू.संसद सदस्य

अमाजुरश्चिद्भवथो युवं भगोऽनाशोश्चिदवितारापमस्य चित्।
अन्धस्य चिन्नासात्या कृशस्य चिद्युवामिदाहुर्भिषजा रुतस्य चित्।।
-ऋग्वेद 10/39/3

शब्दार्थ-

(नासत्या) कभी भी परस्पर असत्य, मिथ्या भाषण और अनुचित आचरण न करनेवाले **(युवम्)** तुम दोनों, अर्थात् पति-पत्नी **(अमाजुरः)** घर में वृद्धावस्था-पर्यन्त सहचारी बनकर **(भगः भवथः)** सर्वानन्दयुक्त जीवन व्यतीत करो [किन्तु कुछ आवश्यक कर्त्तव्यों का निर्वाह करते हुए] यथा-, **(अनाशौश्चित्)** भूखे को अन्न दो, **(अपमस्यचित्)** निकृष्ट जघन्य दीनजनों को भी सहारा दो, **(अन्धस्य च)** नेत्रहीन की कठिनाई का भी समाधान करो, **(कृशस्यचित्)** दुर्बल और अशक्त के भी **(अवितारा भवथः)** रक्षक बनो, **(युवाम्)** तुम दोनों पति-पत्नी को लोग **(रुतस्यचित्)** रोग-पीड़ित को **(भिषजा)** चिकित्सा द्वारा **(अवितारा)** कष्ट निवारक **(आहुः)** कहते हैं।

व्याख्या-

यदि कोई गृहस्थ वानप्रस्थ के उच्चादर्शों का निर्वाह नहीं कर सकता तो वह प्रसन्नता से गृहस्थ में रह सकता है। वेद कहता है कि इससे उसके निःश्रेयस में कोई बाधा नहीं है। किन्तु उसे वार्धक्य में पाँच कर्त्तव्यों का पालन अनिवार्य रूप से करना है। 'भूखे को भोजन देना' मनुष्य का प्रथम कर्त्तव्य है। वेद से लेकर नीतिशास्त्रों तक सर्वत्र इसका वर्णन उपलब्ध है। ऋग्वेद के दशम मण्डल के एक सौ सत्रहवें सूक्त में इसी बात पर बड़े काव्यमय ढंग से अद्भुत प्रकाश डाला गया है-

न वा उ देवाः क्षुधमिद् वधं ददुरुताशितमुप गच्छन्ति मृत्यवः। उतो रयिः पृणतो नोपदस्यति, उतापृणन् मर्डितारन्न विन्दते।। (ऋ. 10/117/1)

'प्रभु ने मरने के लिए केवल भूख ही नहीं दी है। जो खाते-पीते और गुलछर्रे उड़ाते हैं, मरते वे भी हैं। जो औरों का पेट भरने के लिए अपने साधनों का त्याग करते है। उससे उनका धन नष्ट नहीं हो जाता। किन्तु जो न देनेवाला है,वह कभी अपने किसी सुख देनेवाले को नहीं प्राप्त कर सकता।'

दूसरा कर्त्तव्य है-**'अपमस्य चित्'**- जो साधनों के अभाव में दुःखी हैं, जिनमें काम-काज करने की सूझबूझ तो है, किन्तु साधनों के अभाव के कारण कुछ कर नहीं पाते, ऐसे अभावग्रस्त व्यक्तियों को कुछ कारोबार के साधन जुटा देने चाहिए; शेष काम तो वे स्वयं कर लेंगे। मेरे परिचितों में कुछ परिवार ऐसे हैं, जो देश-विभाजन के पश्चात् साधनों के अभाव में खाने-पीने से भी तंग हो गये थे। यथा-तथा हाथ-पैर मारके वे सँभले और अब वे करोड़ों का कारोबार कर रहे हैं। ऐसे श्रमी और बुद्धिमान् व्यक्तियों को यथा-सामर्थ्य सहारा देकर आत्मनिर्भर बना देना चाहिए। यह भी समाज की महत्त्वपूर्ण सेवा है।

आगे तीसरा कर्त्तव्य है-**'अन्धस्य चित्'**- जो दृष्टि से वंचित हो गए हैं, उनके कष्ट को समझकर उनकी सहायता करना। संसार में दृष्टिहीन व्यक्ति की असमर्थता को भी आँखवालों को समझना चाहिए। आँख एक ऐसी इन्द्रिय है, जिसके अभाव में बुद्धिमान् व्यक्ति भी पराश्रित जो जाता है। ऐसे व्यक्ति तुम्हारी सहायता के पात्र हैं। मार्ग में चलते वे भटक रहे हों और आप ईश्वर की कृपा से साधन सम्पन्न हैं ओर कार में कहीं जा रहे हैं तो भटकते अन्धे की उपेक्षा मत करें। यदि आपके काम में विशेष बाधा न आवे तो उस नेत्रहीन को उसके अभीष्ट स्थान तक पहुँचा दें। इतना समय न हो तो भीड़भाड़-भरे मार्ग में सड़क पार ही करा दें। इतने से भी उस असहाय को बड़ा सहारा मिल जाएगा। अनेक व्यक्ति ऐसे हैं, जो थोड़े से उपचार से ही काम चलाऊ दृष्टि पा लेते हैं। ऐसों को खोज खोजकर उनके इलाज का प्रबन्ध कराना चाहिए। प्रभु ने यदि शक्ति दी हो तो ऑपरेशन आदि के कैम्प लगाने चाहिएँ। असमर्थों को चश्मे लगवाने में सहायता करनी चाहिए।

मंत्र में चौथी बात कही-**'कृशस्य चित्'**-जो पाप-रोगी हैं, अपंग हैं, कुष्ठादि व्याधियों से पीड़ित हैं, उनकी सहायता करना भी तुम्हारा पवित्र कर्त्तव्य है। वे बेचारे अपना कर्मफल तो भोग ही रहे हैं, किन्तु उस अवस्था में भी उनके कष्ट को कम करने के उपाय करते रहने चाहिएँ। इस दिशा में महात्मा गाँधी के जीवन से शिक्षा लेनी चाहिए। वे नियमित रूप से एक कुष्ठी के घावों की सफाई करके औषध लगाते थे। यह बहुत उच्च आदर्श का सेवाकार्य है। शास्त्रकारों ने बलिवैश्वदेव यज्ञ में पापरोगियों की सहायता का भी निर्देश किया है।

मंत्र में अन्तिम और महत्त्वपूर्ण पाँचवीं बात कही है-**'रुतस्य भिषजा अविता भवत'**-औषध का प्रबन्ध करके रोगी का कष्ट निवृत्त करो। कुछ रोग इस प्रकार के होते हैं जिनमें सामान्य व्यक्ति के लिए औषध का प्रबन्ध करना कठिन होता है। ऐसे व्यक्तियों की सहायता का भी सद् गृहस्थों को ध्यान होना चाहिए। इस विषय में दिल्ली के एक धार्मिक आर्य सज्जन का आदर्श उदाहरण लिख देना मैं आवश्यक समझता हूँ-

बात उन दिनों की है जब आर्य समाज लोदी रोड नयी दिल्ली का जोरबाग वाला भवन नहीं था। आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग आर्य हाई स्कूल के टैण्टों में लगा करते थे। उस समय के आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता बड़े उत्साही और धार्मिक भावनाओं से ओतप्रोत थे।

(शेष पृष्ठ 3 पर.......)

दयानन्द चरितम्

-आचार्य दीपंकर, मेरठ

छन्द-७१

स्थितीनां सद्बोधात्कलयति सुधी वास्तविकतां
वदन् कल्याणाय ध्रुवममरपुत्रो भवति सः।
त्वया ज्ञात्वा पीड़ां सुविशदतया राष्ट्रमनसो
यदुक्तं तत्कालेऽभवदिह वचो भारतभुवः।।

बुद्धिमान व्यक्ति
बोलने से पहले वास्तविकता का
बोध करता है और
इसके लिए परिस्थितियों का
मूल्यांकन करता है!
तब जो कुछ भी वह कहता है उसका
उद्देश्य जनकल्याण होता है।
और वहीं व्यक्ति धरती का अमर पुत्र हो जाता है!!
बोलने से पहले तुमने
राष्ट्र के मन की
विस्तारपूर्वक पीड़ा समझी!
इसके बाद
जो कुछ भी बोले
तत्कालीन भारत की वही
वाणी बन गयी।

('दयानन्द चरितम्' से साभार, क्रमशः)

पुण्य स्मरण

आर्य समाज हसनगंज पार लखनऊ के पूर्व प्रधान

नारायणदीन चौधरी

-देवेन्द्र नाथ चौधरी

लखनऊ जनपद में कतिपय ऐसे आर्य पुरुषों का आविर्भाव हुआ है, जिन्होंने आर्य सिद्धान्तों में अपने जीवन को ढाला तथा चरित्रबल एवं विद्याबल से सामाजिक जीवन को उच्चतर बनाने हेतु कार्य किया और आर्य समाज के शक्तिस्रोत के रूप में उदित हुए। ऐसे ही व्यक्तियों में एक नाम स्मरणीय है- नारायणदीन आर्य चौधरी। आप ग्राम बछरावाँ, जनपद रायबरेली के मूल निवासी थे; आपके पिता का नाम श्री बदलराम चौधरी था। नारायणदीन मूलतः शिक्षक थे। राजकीय सेवा में नियुक्ति के प्रारम्भ के दो वर्ष राजकीय हाईस्कूल, हरदोई में; तत्पश्चात राजकीय इण्टर कालेज, रायबरेली में सेवानिवृत्ति पर्यन्त अध्यापक रहे।

प्रारम्भ से ही आर्य समाज से जुड़े रहे तथा रायबरेली आर्य समाज में विभिन्न पदों पर रहते हुए समाज की सेवा करते रहे। वर्तमान आर्य समाज रायबरेली के संस्थापक सदस्यों में से एक थे। घर पर नित्य दैनिक यज्ञ करते थे तथा विशेष अवसरों पर घर पर ही बृहद यज्ञों का आयोजन कराते रहते थे। सेवानिवृत्ति के कुछ वर्षों पश्चात् १९५४ में लखनऊ के डालीगंज में अपना मकान बनवाया और परिवार सहित रहने लगे। तब से मृत्यु पर्यन्त आर्यसमाज हसनगंज, डालीगंज से जुड़े रहकर विभिन्न पदों पर रहते हुए समाज का कार्य करते रहे।

अपने कार्यकाल में चौधरी साहब ने डालीगंज आर्य समाज के प्रांगण से बाहर निकलकर प्रचार की दृष्टि से बाबूगंज स्थित पार्क तथा मौसमगंज रामलीला मैदान व रामाधीन सिंह भवन के बगल के खाली मैदान में वार्षिक उत्सवों का आयोजन किया जिसमें दो बार श्री ओम प्रकाश त्यागी, स्वामी रामेश्वरानन्द तथा अन्य ख्यातिप्राप्त आर्य विद्वानों के वेदोपदेश कराये। चौधरी साहब उस समय के प्रतिष्ठित विद्वान स्व.मेधावी शास्त्री से विशेष रूप से जुड़े रहे। स्वयं मेधावी जी उनके व्यक्तित्व

(शेष कालम 3 पर.....)

दान किसे दें?

-राम मनोहर वैश्य

वास्तव में दान की जिन्हें आवश्यकता होती है अधिकतर उन्हें नहीं मिल पाता जिसके कारण अनेक सामाजिक संगठन, सार्वजनिक स्थल, विद्यालय, अनाथालय वे सेवा संस्थान अपना स्वरूप खो चुके हैं या संघर्ष कर रहे हैं। अतः आप उन संस्थानों को दान करें जिसमें जनहित जुड़ा हो। आप अपनी आय से प्रतिवर्ष जो राशि अलग निकालें उसे इन स्थानों पर दान करें-

१. स्थानीय जीर्ण शीर्ण धार्मिक स्थल २. सार्वजनिक स्थल को सुधारने में ३. सार्वजनिक विद्यालय में ४. निर्धन बच्चों की शिक्षा में ५. निर्धन बालिकाओं के विवाह में ६. सामूहिक विवाह में ७. अनाथालय में ८. विधवा आश्रम में ९. सामाजिक हित के आश्रम में १०. आर्य समाज मन्दिर में ११. वैदिक विचार धारा के प्रचार प्रसार में संलग्न समाचार पत्रों में।

वैदिक विचारधारा के प्रचार प्रसार में संलग्न 'आर्य लोक वार्ता' जैसे पत्रों को दान दें। यह पल्लवग्राही दान है। सार्थक दान है।

इन स्थानों पर दिया गया दान समाज के हित में कार्य करता है। इसी प्रकार के दान की व्याख्या वेदों में भी वर्णित है। ऋषियों मुनियों ने दान शब्द की व्याख्या इसी प्रकार की है।

-बेनीगंज, जिला हरदोई

(पृष्ठ 2 का शेष.....)

तब आर्य समाज के प्रधान श्री लाला जीवनदास चोपड़ा थे, जो कुछ वर्ष पूर्व दिवंगत हो गए। श्री चोपड़ा जी बड़ी सात्त्विक भावना के आर्य पुरुष थे और सदस्यों में उनका बड़ा सम्मान था।

एक दिन साप्ताहिक सत्संग की समाप्ति पर श्री प्रधान जी ने सत्संगी भाई-बहनों से कहा कि आज शाम चार बजे, प्रभु ने जिनको सामर्थ्य दिया है ऐसे भाई-बहन एक-एक थैला फल लावें और साथ ही चाकू भी। उसके बाद जो करना है, वह मैं शाम को ही बताऊँगा।

श्री प्रधान जी की इच्छानुसार बीस-बाईस स्त्री-पुरुष फल लेकर आ गए। श्री प्रधान जी ने कहा-अब हम सब सफदरजंग अस्पताल चलेंगे। वहाँ पहुँचकर प्रत्येक वार्ड में दो-दो की ड्यूटियाँ लगाईं और उन्हें हिदायत दी कि जिस रोगी के पास कोई पूछने वाला न आया हो और जो असहाय प्रतीत हो रहा हो, उसके पास पहुँचें और कहें कि हम आर्यसमाज के सदस्य हैं और आप लोगों की सेवा करने आए हैं। यह कहकर उसके अनुकूल फल छील-काटकर खिलावें। यदि औषध की आवश्यकता हो तो नोट कर लें, यह सब प्रबन्ध वे स्वयं कर देंगे।

इस प्रकार वे लोग जब अस्पताल में सेवा में तत्पर हुए तो सारे अस्पताल में एक हलचल सी मच गई। जिस रोगी के पास जाकर ये लोग आत्मीयता से फल देते और पूछते थे, वह रोगी अश्रुपूरित नेत्रों से उन्हें देखता हुआ धन्यवाद करता था। सारे अस्पताल में इस कार्य की बड़ी सराहना हुई और सभी सदस्य इस कार्य से बहुत प्रसन्न हुए तथा भविष्य में भी आने का निश्चय कर लौटे। इसके स्थान पर आर्यसमाज के अधिकारी महीनों कथा-वार्ता कराते, तब भी यह प्रभाव बनना कठिन होता जो सात्त्विक सेवा भाव ने बना दिया। अतः पाँचवाँ कर्त्तव्य वेद ने रोगियों की औषधोपचार से सेवा करना बताया। जो गृहस्थ अपने वार्धक्य को इस प्रकार बिताते हैं, उनका पुण्य वानप्रस्थ से किसी प्रकार कम नहीं है।

('श्रुति सौरभ' से साभार)

(कालम 2 का शेष.....)

से इतना प्रभावित थे कि उनके स्वर्गवास पर अपनी स्वनिर्मित एक बोरी हवन सामग्री अपने कंधे पर स्वयं रखकर लाए फिर श्मशान घाट पर जाकर स्वयं अंत्येष्टि करायी तथा तीसरे दिन शान्तियज्ञ भी स्वयं सम्पन्न कराया।

आपके बड़े पुत्र जगदीश शरण सिंह वायुसेना से मास्टर वारंट आफिसर पद से सेवानिवृत्त होकर वर्तमान में अपने परिवार के साथ पैत्रिक भवन में रह रहे हैं। छोटे पुत्र श्री देवेन्द्र नाथ चौधरी प्रधानाध्यापक पद से सेवानिवृत्त होकर अपने परिवार के साथ रामाधीन सिंह रोड, डालीगंज के पैत्रिक भवन में निवास कर रहे हैं। देवेन्द्र जी के परिवार में पत्नी श्रीमती उर्मिला चौधरी; तीन पुत्र क्रमशः नरेन्द्र चौधरी, आनन्द चौधरी व आलोक चौधरी; पुत्री ज्योति चौधरी हैं आनन्द चौधरी वर्तमान में आर्य समाज हसनगंज के मंत्री पद रह कर सेवा कर रहे हैं।

अपने देहान्त (२०.०७.६९) से कुछ वर्ष पूर्व चौधरी साहब ने अपने हाथों से अपनी अंत्येष्टि के सम्बन्ध में एक इच्छा-पत्र लिखा था तथा मृत्यु पूर्व ही पूरे परिवार के समक्ष पढ़कर सुनाया था। मृत्यु के पश्चात दोनों पुत्रों तथा सम्मिलित परिवार के अन्य सदस्यों ने मिलकर उनके इच्छा-पत्र का अक्षरशः पालन किया था।

-रामाधीन सिंह रोड, डालीगंज, लखनऊ

वाचनालय से

'जानिए रोज़मर्रा की ऐसी पाँच चीजें, जिनपर सऊदी अरब में है पाबंदी।' **'दैनिक भास्कर'** के अनुसार दुनिया में तमाम ऐसे देश हैं, जहाँ इंसानों द्वारा ही बनाये गये अजीबोगरीब नियम कायदे उसके मूल अधिकारों को भी उनसे छीन लेते है। साऊदी अरब उन्हीं देशों से में एक हे।

सऊदी अरब में अब 'राम' के नाम पर भी प्रतिबन्ध लगा दिया गया। कोई भी शख्श अब अपने बच्चे का नाम 'राम' नहीं रख पायेगा। 'राम' के साथ-साथ 'माया' और 'मल्लिका' जैसे अन्य कई नामों को भी प्रतिबन्धित कर दिया गया है, जो भारत में काफी पॉपुलर हैं।...कई और नामों को बैन किया गया है, जिसमें ज्यादातर पश्चिमी देशों में बच्चों के लिये इस्तेमाल किये जाते हैं। कुछ ऐसे ही नाम हैं- लिंडा, एलिस, लॉरिन आदि।....सऊदी अरब में महिलाओं के गाड़ी चलाने पर प्रतिबन्ध है।...केवल परिवार के पुरुष सदस्य और ड्राइवर ही गाड़ी चला सकते हैं।

सऊदी अरब में गैर-मुस्लिम लोगों के लिये सार्वजनिक तौर पर पूजा-पाठ करना वर्जित है। किसी सार्वजनिक स्थान पर भगवान की तस्वीर, बाइबिल, क्रॉस और बाकी धार्मिक सामग्रियों को इस्लाम आजादी नहीं देता। वो अपने धर्म के साथ किसी भी तरह की प्रतियोगिता नहीं चाहते। इतना ही नहीं, अगर कोई इस्लाम घर्म को छोड़कर कोई ओर धर्म अपनाना चाहता हो, तो उसे मौत की सजा का सामना करना पड़ सकता है।...साऊदी अरब में ४५ वर्ष से कम उम्र की महिला के लिये अकेले सफर करना आसान नहीं। सफर के दौरान महिला साथ पिता या पति का होना जरूरी है।...सार्वजनिक जगहों पर महिलायें और पुरुष एक साथ नहीं बैठ सकते। इसके लिये जरूरी है कि दोनों एक ही परिवार से ताल्लुक रखते हों, या फिर पति पत्नी हों।

साऊदी अरब में भले ही अब म्यूजिक इण्डस्ट्री का काम बढ़ रहा है, लेकिन सार्वजनिक जगहों पर संगीत चलाने या स्कूलों में संगीत की शिक्षा देने पर पाबंदी है। संगीत सीखने के लिये लोग स्थानीय शिक्षकों का सहारा लेते हैं।

'अब हिन्दू नहीं रख सकते 'राम' या 'माया' नाम' शीर्षक समाचार देते हुए **'प्रभात खबर'** बताता है कि सऊदी अरब राजपरिवार ने आम भारतीय नामों समेत ५० नामों को सांस्कृतिक और धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचाने वाला बताकर प्रतिबंधित कर दिया है।

सऊदी अरब में करीब सात फीसदी तादाद भारतीय मूल के लोगों की है। २०१३ में सऊदी अरब में रहने वाले भारतीयों की तादाद साढ़े २४ लाख के आसपास थी। सऊदी अरब ने नामों को बैन करने के समर्थन में तर्क देते हुए कहा है कि ये नाम धार्मिक संवेदनाओं को आहत करते हैं, राजपरिवार से जुड़े हुए हैं और गैरइस्लामी मूल के हैं।

'पाकिस्तान में धर्मग्रन्थ जलाये जाने से नाराज भीड़ ने मंदिर में आग लगाई' शीर्षक समाचार देते हुए **'दैनिक भास्कर'** लिखता है कि पाकिस्तान के सिन्ध प्रान्त के लरकाना जिले में एक अल्पसंख्यक युवक द्वारा कथित रूप से धर्मग्रन्थ के कुछ पन्ने जलाये जाने के बाद स्थिति खराब हो गयी। उग्र भीड़ ने एक मन्दिर और एक धर्मशाला में आग लगा दी। जियो न्यूज के हवाले से आई खबर के अनुसार प्रदर्शनकारियों ने आग लगाने के बाद हिन्दू युवक के घर को घेर लिया, जिसे बाद में पुलिस ने आंसू गैस के गोले और गोली चालाने की चेतावनी देकर खाली कराया। शहर के जिन्ना बाग और कुछ दूसरे इलाकों में कर्फ्यू लगा दिया गया। स्थानीय हिन्दू पंचायत की प्रमुख कल्पना देवी ने बताया कि हिन्दू समुदारय का वह युवक ड्रग्स लेने का आदी है।

'दक्षिण अफ्रीकी स्कूलों के पाठ्यक्रम में शामिल होंगी भारतीय भाषाएँ' शीर्षक समाचार देते हुए **'दैनिक जागरण'** लिखता है कि दक्षिण अफ्रीका के सरकारी स्कूलों में से भारतीय भाषाओं को हटाये जाने के करीब दो दशक बाद हिन्दी, तमिल, तेलुगू, गुजराती और उर्दू को दोबारा पाठ्यक्रम में शामिल कर लिया जायेगा। यह कदम देश में रहने वाले करीब १४ लाख भारतीय मूल के लोगों की अपील के बाद उठाया गया है। इन भाषाओं को सिर्फ क्वाजुलू प्रान्त में छात्र तीसरी वैकल्पिक भाषा के तौर पर चुन सकेंगे। इस प्रान्त में ७० फीसदी आबादी भारतीय मूल के लोगों की है।

'हिजाब न पहनने वाली महिला वेश्या' शीर्षक समाचार देते हुए **'पंजाब केसरी'** लिखता है कि जॉर्डन की अदालत के फैसले के अनुसार, उस महिला को वेश्या कहा जायेगा, जो अपना चेहरा हिजाब से नहीं ढकती। जार्डन के इस घटिया फैसले का पूरी दुनिया में विरोध किया जा रहा है। अदालत ने एक फतवे का समर्थन कर यह फैसला किया है, जिसमें कहा गया था कि हिजाब न पहनने वाली महिला बुरे चरित्र की और वेश्या के समान है। इसमें यह भी कहा गया कि ऐसी महिला को अदालत में बयान देने के लिए पात्र नहीं माना जा सकता।

'पाकिस्तान में मूर्ति तोड़ी, मन्दिर में आग लगाई' शीर्षक समाचार देते हुए **'नवभारत टाइम्स'** लिखता है कि पाकिस्तान के सिंध प्रान्त में तीन अज्ञात लोगों ने एक मन्दिर में आग लगा दी। इस मन्दिर में दो हफ्ते बाद एक वार्षिक उत्सव होने वाला था। कराची के लतीफाबाद स्थित हनुमान मन्दिर की देखभाल करने वाले दर्शन नाम के व्यक्ति ने पुलिस को बताया कि शुक्रवार को तीन लोग प्रार्थना में शामिल होने आये थे। पूजा-अर्चना में शामिल होने के बाद इन लोगों ने पहले हनुमान की मूर्ति को तोड़ा और फिर मिट्टी का तेल छिड़करकर मन्दिर में आग लगा दी। जब वह मदद के लिए चिल्लाये तो हमलावर भाग गये।

'भारत का प्राचीन विज्ञान अभी भी अर्थ पूर्ण है' शीर्षक **'दयानन्द सन्देश'** (दिल्ली) में प्रकाशित अपने लेख में उत्तरा नेरूरकर लिखती हैं कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। हम वेदों से कितना ग्रहण कर पायें, वह हमारे ऊपर है।...वैदिक विद्वानों और वैज्ञानिकों को मिलकर वेद के वचनों को सच्चा प्रमाणित करना चाहिए। वेद वाक्यों से हम ब्रह्माण्ड के अनेक रहस्य खोले सकते हैं।....एक आश्चर्य है- भारत के अनेक किलों, इमामबाड़ों आदि में ध्वनि-प्रसार। हम देखते हैं कि यदि एक निश्चित स्थान पर हम ताली बजायें तो उसकी ध्वनि एक किलोमीटर दूर तक के स्थान तक बिना रोक-टोक के पहुँच जाती है...माचिस की तीली की ध्वनि दूसरे छोर पर स्पष्ट सुनाई पड़ जाती है। प्राचीन तकनीक को समझकर हम वही हार्ड-फिडेलिटी साउण्ड प्राप्त कर सकते हैं। ●

विविधा / शुभाकांक्षा

आर्य समाज सीतापुर की स्मृतियाँ

आर्य लोक वार्ता प्रकाशन का शुभारम्भ वर्ष १९९८ में हुआ। वैदिक धर्म, मानव धर्म एवं आर्य समाज के प्रचार प्रसार की इस मासिक पत्रिका से मेरा संबन्ध भी आरम्भ से रहा है। इस प्रत्रिका का प्रकाशन, विज्ञापन की आय के बगैर, अवैतनिक सम्पादक मण्डल द्वारा एवं सुधी पाठकों के सहयोग से निर्बाध गति से चल रहा है। इस श्रेयकर कार्य में इस पत्रिका की ओर से आर्य विचार धारा के श्रेष्ठ एवं समर्पित व्यक्तियों को प्रेरित करने के निमित्त वर्ष २००५ से सम्मान समारोह की परिपाटी चली। पहला सम्मान समारोह वर्ष २००५ में आर्य समाज, चन्द्रनगर, आलमबाग, लखनऊ के सभागार में सम्पन्न हुआ जिसमें मेरठ व लखनऊ के यशस्वी श्री पाल प्रवीण को सम्मानित किया गया था। दूसरा सम्मान समारोह आर्य समाज लाजपतनगर, चौक, लखनऊ के सभागार में वर्ष २००६ में सम्पन्न हुआ, जिसमें मुझ अकिंचन को सम्मान दिया गया। इस शृंखला की कड़ी में वर्ष २०१४ का सम्मान समारोह दिनांक १ मार्च २०१४ को राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह, कैसरबाग, लखनऊ में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अन्य विशिष्ट महानुभावों के अतिरिक्त मुझे पं.गंगाधर शर्मा (सीतापुर) स्मृति सम्मान के योग्य समझा गया। मैं विनम्र भाव से सम्पादक मण्डल का आभारी हूँ।

इस सम्मान से मुझे अपने सीतापुर प्रवास वर्ष १९६६-६९ की आर्य समाज सीतापुर के तत्कालीन प्रधान पं.गंगाधर शर्मा की याद ताजा हो गई। वर्षों के बने स्वभाव के अनुरूप मैं अपनी नियुक्ति के प्रत्येक जिले में आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संगों में भाग लेता था। सीतापुर जनपद में पुलिस विभाग में पी.ए.सी.ट्रेनिंग सेण्टर में नियुक्ति के काल में भी नियमित रूप से सीतापुर नगर के मुख्य बाजार में स्थित पुरानी आर्य समाज में जाने लगा। उस समाज के यशस्वी प्रधान पं.गंगाधर शर्मा से भेंट हुई। वह बड़े गम्भीर स्वभाव के व्यक्ति थे तथा उन्होंने बड़े प्रेम व आदर से भी सदस्यों से परिचय कराकर मुझे सभासद स्वीकार किया। मुझे पता चला कि प्रधान जी आर्य विद्वान तो हैं ही, पर वह राष्ट्रभक्त सीतापुर जिले के मिश्रिख क्षेत्र से उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य भी रहे हैं। मुझे उनमें किसी प्रकार के अहंकार की भावना नहीं दिखती थी। वह साधु वृत्ति के व्यक्ति थे।

उस समाज में उन दिनों ८ बजे से ११ बजे तक सत्संग चलता था। यज्ञशाला में एक महाशय साहु जी अपने हाथ से चन्दन घिसकर सबको तिलक लगाते थे। नगर के सम्भ्रान्त धार्मिक व्यवसायी श्री ओम प्रकाश अग्रवाल जी व अन्य सज्जन सदस्य मुझसे बहुत स्नेह से मिलते थे। साप्ताहिक सत्संग में प्रायः उपस्थिति ३५-४० की रहती थी। प्रधान जी ने मुझे पहली बार मंच पर बुलाकर सामूहिक संध्या कराने को कहा। मैं संकोच करने लगा तो कहा कि आर्य समाज में आकर यदि प्रधान अथवा मंत्री कुछ निर्देश दे तो उसका सहर्ष पालन करना चाहिए। मैंने सामूहिक संध्या कराई। प्रधान जी ने उच्चारण का सुधार कराया। इस प्रकार मेरा संकोच दूर हुआ। सत्संग के बाद मैं प्रायः समाज की लाइब्रेरी से स्वाध्याय के लिये एक पुस्तक ले जाया करता था। इससे मेरी स्वाध्याय की रुचि बढ़ती चली गई। एक दिन प्रधान जी ने कहा कि आप १०० रुपये दे दें आपके लिए वैदिक यन्त्रालय अजमेर से ऋषि दयानन्द कृत मौलिक प्रमाणित पुस्तकें मंगा देंगे। इससे स्वाध्याय में प्रगति हो जायगी। मैंने ऐसा ही किया। उन दिनों वैदिक साहित्य सब जगह नहीं मिल पाते थे। कुछ दिनों में पुस्तकें आ गईं। इनमें चारों वेद, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, सत्यार्थ प्रकाश, आर्य अभिविनय, संस्कार विधि, आर्य पर्व पद्धति तथा कुछ अन्य लघु पुस्तकें प्राप्त हुईं। इन पुस्तकों के माध्यम से मुझे मूल आर्ष ग्रन्थों को पढ़ने व समझने में बहुत मदद मिली। इस प्रेरणा एवं सहयोग उपकार के लिये मैं पं. गंगाधर शर्मा प्रधान जी का सदा कि लिए आभार मानता हूँ।

सीतापुर आर्य समाज में वार्षिक उत्सव बड़े धूमधाम से मनाए जाते थे जिसमें नगर के विशेषकर साथ के बाजार व मण्डी के लोग बड़ी संख्या में भाग लेते थे। मुझे स्मरण है कि एक बार वार्षिक कार्यक्रम में तत्कालीन युवा महात्मा वेदोपदेशक आनन्द गिरि जी पधारे थे। महात्मा आनन्द गिरि से मेरी व्यक्तिगत भेंट हुई तथा मेरे आग्रह पर वह मेरे सरकारी आवास पर पधारे थे तथा पी. ए.सी. बटालियन के जवानों को उपदेश किया था- सबकों महाभारत के रोचक ज्ञानवर्धक प्रसंगों के माध्यम से मनोबल बढ़ाया था।

यह बड़ी प्रसन्नता का विषय है कि आर्य लोक वार्ता के प्रधान सम्पादक महोदय ने उस तेजस्वी महात्मा के व्याख्यानों को 'अनन्त की खोज' शीर्षक के अन्तर्गत फरवरी २०१४ के अंक से क्रमशः प्रकाशित करना आरम्भ कर दिया है।

-जगदीश लाल खत्री
'ध्रुव', ५००, हिन्द नगर, कानपुर मार्ग, लखनऊ

***

कमलवत् थीं कमल अग्रवाल

कमल व मेरा विवाह ३० नवम्बर १९६४ में हुआ, कमल उस वक्त एम.ए. (मनोविज्ञान) की छात्रा थीं जो मई १९६५ में पूर्ण हुई। मैंने देखा कमल प्रारम्भ से ही अत्यंत मननशील, सहनशील धर्म व कर्म की मर्यादाओं का पालन करने वाली, अपने से अधिक अन्यों का हित साधने वाली थीं।

इन्दिरा नगर, लखनऊ में घर बनाने से पहले हम महानगर में किराये के मकानों में रहे। वहां आर्य समाज की गतिविधियों में अपना समुचित योगदान करने के उपरान्त अक्टूबर १९८० में इन्दिरा नगर में अपने घर से इन्दिरा नगर आर्य समाज की स्थापना करने का विचार मन में लेकर आये। अतः यह प्रवेश के हवन से आर्य समाज स्थापना की सूचना भेजी गई व बड़ी संख्या में उपस्थित अतिथियों के समक्ष आर्य समाज की शुरुआत की गई। यह समाज लगभग चार वर्षों तक हमारे निवास पर ही चलती रही। कमल आर्य समाज के बड़े आयोजन बड़ी रुचि व निष्ठा के साथ किया करती थीं। लगभग १५ वर्षों तक इन्दिरा नगर में महिला वैदिक सत्संग का संचालन केवल स्वयं के बल पर निरंतर करती रहीं। माह के अंतिम बृहस्पतिवार की संध्या इसके लिए निश्चित थी। अधिकतर श्री हरिवंशलाल मेहता का प्रवचन निश्चित था। होली की पूर्व संध्या पर एक बड़े यज्ञ का आयोजन कमल अपने निवास पर अत्यंत आनंदपूर्वक करती रहीं, जिसमें लगभग १५० से ज्यादा उपस्थिति होती थी।

फिर वह समय आया जब हमें लखनऊ छोड़ हरिद्वार जाना हुआ। २००५ के अप्रैल में हरिद्वार में एक सामान्य तीन कमरों के फ्लैट में आ गये। विदेश यात्रा का कार्यक्रम प्रतिवर्ष चलते रहते। कन्या शिक्षा को प्रोत्साहन देने की अभिलाषा से कुछ ऐसे गुरुकुलों से जुड़े। बच्चों के संस्कार कार्यक्रम जो लखनऊ में प्रारम्भ किये गए थे, उन्हें आर्यसमाज बी.एच.ई.एल. में चलाया गया। २०११ में समर कैंप के आयोजन से कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया।

उन्हें अपने साज शृंगार में रुचि नहीं के बराबर थी। सादे जीवन में वे आनंद की अनुभूति करती थीं। किसी वस्तु की इच्छा या मांग कमल ने कभी नहीं की। बच्चों को पढ़ाने में अत्यंत रुचि लेती थीं। अपेन बच्चों के साथ अन्य बच्चों को भी पढ़ाती रहीं।

मेरी जीवन साथी बनकर ४८ वर्ष से कुछ अधिक समय तक मेरे लिए पारिवारिक, आत्मिक व सामाजिक कार्यों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी रहीं। मुझे हमेशा यही कहती कि हमें जीवन का अंतिम समय सामाजिक कार्यों में ही व्यतीत करना चाहिए। अन्यों के जीवन को उत्तम बनाने में सहायक होने में ही मानव जीवन की सार्थकता है। यही मानव का धर्म है। सब साज सामग्री व्यर्थ है यदि किसी के काम न आई। कमल अंतिम समय तक आत्मविश्वास से परिपूर्ण, अन्यों की प्रेरक, बच्चों को उत्साहित करने वाली, सहायता करने वाली, पुरुषार्थ करने वाली, श्रेष्ठ कर्म करने वाली, आदि आदि गुणों से परिपूर्ण रहीं। उनका स्वास्थ्य उत्तम नहीं अतिउत्तम था। वह हमेशा ऊर्जा पूर्ण रहती थी। मुझे याद नहीं कि कमल अपने ४८ वर्षों के साथ में कभी दो या तीन दिन से अधिक अस्वस्थ होकर लेटी हों। कमल मेरे लिए इस जीवन में परमेश्वर का सबसे मूल्यावान उपहार बनकर आई और जैसे आई वैसे ही बिना किसी को अंशमात्र भी कष्ट दिए अपने ही कदमों से चलकर प्रकृति निर्मित शरीर को प्रकृति में आहूत कर ब्रह्म में लीन हो गईं। न जाने कितने लोगों ने कहा होगा 'ऐसी अंतिम यात्रा के लिए बड़े बड़े योगी तपस्वी इच्छा करते हैं, तरसते हैं। ऐसा उपहार परमेश्वर सबको दे। ऐसे जीवन साथी न रहने पर मनुष्य अधूरा हो जाता है। उसकी प्रेरणा खो जाती है, शक्ति आधी भी नहीं रहती।

मनुष्य जीवन आत्मा के लिए परमेश्वर का उच्चतम प्रसाद है। बहुमूल्य भेंट है। अतः इसकी रक्षा करना न केवल धर्म है वरन् एक दायित्व है जिससे इसका उपयोग संसार को श्रेष्ठता की ओर ले जाने में किया जा सके। प्रत्येक जीवन असाधारण है जो अज्ञान के कारण साधारण दिखाई देता है। एक एक जीवन अंतिम है अनूठा है। न कभी आया था और न आएगा। अतः इसका पूर्ण उपयोग करते हुए जीना ही मानव धर्म है। कर्मशील होकर उत्तम कर्म करते रहना धर्म है, अकर्मण्य हो जाना अधर्म है।

मैं अंतिम श्वास तक हमारे द्वारा लिए गए व्रतों के पालन करने तथा कमल द्वारा प्रारंभ किये कार्यों को पूर्ण करने, उनके द्वारा संजोये गये सपनों को पूरा करने का यत्न करता रहूँगा। यही मेरे जीवन का प्रयोजन है। केवल यही सोच मुझे शक्ति व आत्मविश्वास प्रदान करती है और करेगी

-इंजी.जेपी अग्रवाल
२०१४, गायत्री लोक, कनखल, हरिद्वार

***

'आर्य्य लोक वार्ता' का नव्यतम संयुक्तांक ९-१० प्राप्त हुआ। सम्मान समारोह २०१४ के चित्रों को निहारकर समारोह की मधुर यादें ताजा हो गईं तथा वे तमाम दृश्य मानस पटल पर उभर कर आ गए। श्री आनन्द गिरि की व्याख्यानमाला 'अनन्त की खोज' ज्ञान-वर्द्धक एवं प्रेरणादायक है। इस बार 'काव्यायन' स्तम्भ नदारद रहा। कदाचित् आगामी अंक में पूर्व प्रेषित रचनाएँ प्रकाशित होंगी। सम्पादकीय बेबाक, पठनीय एवं रोचक है।

-डॉ.मिर्ज़ा हसन नासिर
जी-०२, लोरपुर रेजीडेंसी, न्यू हैदराबाद, लखनऊ

***

'आर्य लोक वार्ता' के माह जनवरी, फरवरी २०१४ के अंकों की सभी सामग्री प्रत्येक दृष्टि से न सिर्फ संग्रहणीय है वरन् महान पुरुषों के विषय में शोधपरक एवं महत्त्वपूर्ण दस्तावेजों को प्रस्तुतीकरण है। दिन प्रतिदिन आर्य लोक वार्ता का प्रसार बढ़ता जा रहा है। मैं विगत दिनों अपनी पत्नी के इलाज के सिलसिले में आयुर्वेद के प्रसिद्ध डाक्टर ए.के.बरनवाल के चैम्बर में गया। जैसे ही मैंने आर्य समाज और डॉ.आर्य का जिक्र किया, उन्होंने 'आर्य लोक वार्ता' का नवीनतम अंक सामने प्रस्तुत कर दिया। प्रायः सभी बुद्धिजीवियों का यह प्रिय पत्र बन गया है। श्री अमृत खरे, डॉ.कैलाश निगम, मिर्जा हसन नासिर, गौरीशंकर आदि साहित्यकारों की अप्रतिम रचनाएँ आर्य लोक वार्ता के कलेवर को सजाती हैं। 'आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह' इस बात को प्रमाणित करता है कि आप प्रतिभाओं को न सिर्फ मंच देते हैं वरन् सम्मान कर उनका उत्साहवर्धन भी करते हैं।

-उमेश 'राही'
३६३ए/४, मोती नगर, लखनऊ

***

इसबार मार्च-अप्रैल का सम्मिलित अंक प्राप्त हुआ जिसमें आपने 'आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह' की विस्तृत जानकारी दी। वास्तव में यह समारोह अविस्मरणीय था जिसमें प्रत्येक का ध्यान रखा गया था।

सम्पादकीय में सम्पादक जी की कलम से निकला एक एक वाक्य पिछले १०-१५ वर्षों का इतिहास सामने लाकर रख देता है और राजनेताओं की ढुलमुल नीति की पोल खोल देता है।

'सत्यार्थ प्रकाश वार्ता' में स्वामी दयानन्द जी ने स्तुति, प्रार्थना, उपासना कैसी हो- का बहुत सुन्दर वर्णन किया है। 'मनुष्य का विराट रूप' तथा 'अनन्त की खोज' अपने गूढ़ अर्थ के साथ सुन्दर लेख हैं।

लाला लाजपतराय की बहन की शादी मेरे दादा जी के भाई श्री रामचन्द्र सहाय के साथ सिसौली जनपद मुजफ्फरनगर में हुई थी। सिसौली लाजपतराय जी की बहन की ससुराल थी। अन्त में केवल आठ पृष्ठों में इतनी प्रचुर और उत्तम सामग्री देने के लिए आपके परिश्रम और लगन के लिए साधुवाद।

-कमलेश पाल
एम.एस.१२०, सेक्टर-डी, अलीगंज, लखनऊ

***

आर्य लोक वार्ता अप्रैल-मई अंक प्राप्त हुआ और सभी विद्वानों के विचारों से अवगत हुई। सम्पादकीय में रवि मंडल देखत लघु लागा बहुत ही प्रभावोत्पादक है। जिस गुजरात से योगेश्वर कृष्ण ने महान् भारत के निर्माण के सपने संजोये थे, महर्षि दयानन्द ने स्वाधीन भारत की नींव रखी, महात्मा गांधी ने सत्य अहिंसा की वंशी बजाई, वल्लभभाई पटेल ने विशाल भारत की संरचना की थी उसी गुजरात उर्वरा भूमि से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का प्रादुर्भाव हुआ है जो देश की अखंडता को सशक्त व समृद्धि प्रदान करेंगे फिर एक बार वैदिक युग का सूर्य उगेगा। 'सत्यार्थ प्रकाश वार्ता' में बताया गया है ईश्वर प्रार्थना कैसी होनी चाहिए ये बहुत ही आवश्यक विषय है इसकी जानकारी सभी को होनी अनिवार्य है। निःस्वार्थ सच्चे हृदय की प्रार्थना ईश्वर सुनता है।

'वेदांजलि' में पं.शिवकुमार शास्त्री ने वैदिक मंत्र का प्रभावशाली विश्लेषण किया है। 'काल' रूपी अश्व चल रहा है जो बुद्धिमान हैं वे ही कालरूपी अश्व की सवारी ले सकते हैं। कहने का आशय स्पष्ट है समय का सदुपयोग होना चाहिए दुरुपयोग कदापि नहीं करना चाहिये क्योंकि कालचक्र रूपी अश्व चलता चला जा रहा है। रुकता नहीं। 'मनुष्य का विराट रूप' में श्री आनन्द कुमार ने परोपकार व दान विषयक अन्य बातों पर प्रकाश डाला है। निःस्वार्थ दान ही सार्थक होता है। मजबूर होकर दिया गया दान कोई महत्व नहीं रखता। इसके अलावा अनावश्यक वस्तु देना भी अनुचित है। दान आवश्यक व उपयोगी हो वही श्रेयस्कर है और उचित समय पर दिया दान ही उत्तम होता है। निष्काम भाव से दान देना चाहिए। आनन्द कुमार जी ने दान की विविधताओं पर अच्छा प्रकाश डाला है। बहुत बहुत साधुवाद।

'व्याख्यानमाला' अनन्त की खोज विशेष महत्वपूर्ण है। महाभारत के युद्ध में जब अर्जुन को अपने सगे संबन्धी देखकर मोह उत्पन्न हो रहा था और वह अपनों से युद्ध न करने का निश्चय कर रहे थे तो उस समय श्रीकृष्ण ने जो उन्हें ज्ञान दिया था वही गीता का उत्तम ज्ञान था। इससे अर्जुन का मोह भंग हुआ और अधर्म पर विजय पाने के लिए उन्होंने गांडीव उठाया।

कुल मिलाकर पत्र के इतने कम पृष्ठों में ढेर सारी और वैविध्यपूर्ण जानकारी अन्यत्र दुर्लभ है।

-प्रमोद कुमारी
सेक्टर-डी, अलीगंज, लखनऊ

***

धारावाहिक-(43)

मनुष्य का विराट् रूप

-आनन्दकुमार-

विनय-नम्रता-सुशीलता

१-एक संवाद

महाभारत के शान्ति पर्व में सागर और सरिताओं का एक सुन्दर संवाद वर्णित है। समुद्र ने नदियों से पूछा- तुम लोग बड़े-बड़े वृक्षों को तो प्रतिदिन बहाकर लाती हो, परन्तु अपने तट पर उत्पन्न होने वाले बेंत को कभी नहीं लातीं, इसका क्या रहस्य है? जान पड़ता है, तुम लोग या तो उसे तुच्छ समझकर उसकी अवहेलना करती हो अथवा उसके किसी उपकार का ध्यान करके उस पर कृपा रखती हो!

नदियों की ओर से गंगा ने उत्तर दिया- देव, हम लोग उन्हीं वृक्षों को उखाड़ती हैं जो हमारे तट पर हमारे ही जल से पोषित होकर हमार सामने अकड़े खड़े रहते हैं। वर्षाऋतु में भी वे हमारे वेग के सामने नत नहीं होते, अतएव हम बलपूर्वक उन्हें निर्मूल कर देती हैं। बेंत ऐसा नहीं करता; वह हमारे प्रवाह के आगे झुककर हमारा सम्मान करता है। अपनी विनम्रता से हमें प्रसन्न करके वह हमारी सम्पत्ति का उपभोग करता है। हम सब उसकी रक्षा करती हैं।

२-एक उपदेश

एक प्रचीन चीनी महात्मा ने मृत्यु-पूर्व अपने शिष्य से कहा- देखो, मेरी जीभ मुँह के भीतर है कि नहीं?

शिष्य ने देखकर उत्तर दिया-हाँ, है।

महात्मा ने पुनः पूछा-अब अच्छी तरह देखकर यह बताओ कि मेरे दाँत भी हैं कि नहीं?

शिष्य ने कहा-दाँत तो एक भी नहीं रह गया है।

महात्मा ने दुबारा प्रश्न किया-क्या तुम बता सकते हो कि जीभ अभी तक क्यों अपने स्थान पर ज्यों की त्यों बनी है और दाँत उखड़ गये?

शिष्य ने कहा-नहीं।

तब महात्मा ने उसे समझाया-जीभ सरस और सुकोमल होती है, इसलि वह अधिक दिन ठहरती है; दाँत कठोर एवं क्रूर होते हैं, इसलिए शीघ्र ही टूट जाते हैं, उनका अस्तित्व मिट जाता है।

३-यत्सारभूतं तदुपासनीयम्

विनय, विनम्रता, सुशीलता का प्रभाव प्रमाणित करने कके लिए इस प्रकार के अनेक द्रष्टान्त दिये जा सकते हैं। बड़े बड़े पेड़ आँधी के झोंके से टूट जाते हैं, परन्तु कोमल तृण अपने स्थान पर खड़े लहलहाते रहते हैं। पशुओं द्वारा चरे जाने पर भी वे समय पाकर फिर बढ़ जाते हैं।

संसार में भी यही देखा जाता है कि जो लोग दूसरों से दंडवत् कराने के लिए उद्दंड बने रहते हैं, उन्हें बाद में स्वयं दंडवत् करना अथवा दंड भोगना पड़ता है। कट्टरता से न तो लोक-प्रतिष्ठा मिलती है, न सफलता और न सुख शान्ति। लोक-जीवन की विभूतियाँ विनय, विनम्रता और सुशीलता से ही सुलभ होती हैं। सुनीति ने अपने सुपुत्र ध्रुव को सुनीति का उपदेश देते हुए सत्य ही कहा था कि तू सुशील, धर्मात्मा, सबका मित्र और प्राणिमात्र का हितैषी बन क्योंकि जिस प्रकार जल स्वभावतः नीचे भूमि की ओर ढुलकता हुआ पात्र में आ जाता है, वैसे ही लोक-सम्पत्तियाँ सत्पात्र मनुष्य के पास स्वतः आ जाती हैं- (विष्णु पुराण)

सुशीलो भव धर्मात्मा मैत्रः प्राणिहिते रतः।
निम्नं यथापः प्रवणाः पात्रमायान्ति सम्पदः।।

सत्पात्रता- सज्जनता विनय से ही मिलती है- 'विद्या ददाति विनयं, विनया-द्याति पात्रताम्।' शास्त्र के अनुसार विद्वान् भी विनयी होने से ही सत्पात्र माना जाता है। विनयी, सुशील और विनम्र होने से ही मनुष्य सभ्य पुरुष कहलाता है। इन्हीं सद्गुणों से संसार में बड़प्पन मिलता है। विनय-स्तुति से मनुष्य क्या देवता तक वश में हो जाते हैं- 'स्तुता अपि देवतास्तुष्यन्ति'-कौटिल्य। वेद में कहा है कि 'नमस्कार सबसे बड़ी वस्तु है, इसलिए मैं वेदों को नमस्कार करता हूँ; देवता लोक नमस्कार के वशीभूत हैं, इसलिए मैं नमस्कार-द्वारा किये हुए पापों का प्रायश्चित्त करता हूँ-(ऋग्वेद ६/५१/८)

नम इद्भ्यं नम आ विवासे नमो दाधार पृथिवीमुत द्याम्।
नमो देवेभ्यो नम ईश एषां कृतं चिदेनो नमसा विवासे।

स्तुति-वंदना विनय के ही अंग हैं। विनय से सचमुच भगवान् भी भक्तों के वश में हो जाते हैं और विनयी की महिमा बढ़ जाती है-'एक तेरे सामने ही सिर झुका, सिर सभी के सामने ऊँचा रहा'-हरिऔध। सन्त कबीर ने कहा है- 'घालि तराजू तौलिये नवै से भारी होय'। अर्थात्, तराजू पर रखकर तोलने पर जो नीचे झुकता है, वही भारी माना जाता है। विनय-नम्रता का यही फल है।

यह स्मरण रखना चाहिए कि विनय या विनम्रता सुशीलता से भिन्न नहीं है। व्यापक अर्थ में शास्त्रीय नियमों के अनुरूप आचरण को विनय कहते हैं। शास्त्री शील-सदाचार से ही सफल होता है- 'शीलवृत्तफलं श्रुतम।' मृदुता, सहिष्णुता, प्रियवादिता, कृतज्ञता, सौम्यता, प्रेम, विनय, करुणा, उदारता, प्रशान्ति और दम्भहीनता आदि सद्गुण शील-सदाचार के ही लक्षण हैं। इन्हीं के द्वारा मनुष्य की शिष्टता प्रकट होती है और शिष्टता ही सज्जन की विशिष्टता है। 'शीलं हि सर्वस्य नरस्य भूषणम्।' हिन्दी में एक कहावत भी है कि शील के बिना डील बेकार है। व्यास जी ने शीलशाली को सर्वविजयी कहा है- 'सर्वं शीलवता जितम्'-महाभारत। कौटिल्य का भी मत है कि शील-सौजन्य ही शत्रु पर विजय कराता है- 'शत्रुं जयति सुवृत्तता'। एक फारसी कवि ने विनयी या सुशील को ही भाग्यवान् कहा है और दुर्विनीत, अशिष्ट को भाग्यहीन- 'बाअदब बानसीब, बेअदब बेनसीब।' वास्तव में विनयी, सदाचारी ही सर्वप्रिय और सर्वमान्य होता है। सुप्रसिद्ध नीतिकार भर्तृहरि ने बड़े सुन्दर ढंग से कहा है कि 'जो नम्रता से ऊँचे होते हैं, पराये गुण कहकर अपने गुण प्रसिद्ध कर लेते हैं, परोपकार में दत्तचित्त होकर अपना भी हित कर लेते हैं, निन्दक दुर्जनों को अपनी क्षमा से ही दूषित कर देते हैं- ऐसे विचित्र चरित्रवाले सज्जनगण संसार में किसके पूजनीय नहीं हैं-(नीतिशतक)

नम्रत्वेनोन्नमन्तः परगुणकथनैः स्वान्गुणान् ख्यापयन्तः,
स्वार्थान्सम्पादयन्तो विततप्रियतरारंभयत्नाः परार्थे।
क्षान्त्यैवाक्षेपरूक्षक्षरमुखरमुखान्दुर्मुखान् दूषयन्तः,
सन्तः सार्श्वचर्या जगति बहुमताः कस्य नाभ्यर्चनीयाः।।

(मनुष्य का विराट् रूप' से साभार, क्रमशः)

व्याख्यान माला (3)

अनन्त की खोज

-आनन्द गिरि-

वर्ण अर्थात् जो वरण किया गया है। गुणकर्म स्वभाव पर आश्रित है न कि जन्म पर। यह इस देश की संस्कृति का केन्द्रीय तत्व था। किन्तु जब सभ्यता संस्कृति से कटकर दूर हुई तब वर्ण व्यवस्था जातिवाद में बदल गयी। जातिवाद में योग्यता के आधार पर मनुष्य का मूल्यांकन नहीं होता अतः सद्गुणों का आग्रह नष्ट हो जाता है। जीवन में संकीर्णता और जड़ता आ जाती है। यह दुर्गुण ऊँच-नीच की कुत्सित भावना पैदा करता है। हिन्दू समाज के रग-रग में यह ऊँच-नीच का भाव जातीय दम्भ बन कर समा गया है। आश्चर्य और दुःख होता हे जब हम देखते हैं कि पशु पक्षी से स्पर्श हो जाने पर स्नान की आवश्यकता नहीं पड़ती किन्तु आदमी से आदमी के छू जाने पर पवित्र होने के लिए स्नान की आवश्यकता है। जो जीवन दर्शन या धर्म आदमी को आदमी से नहीं जोड़ सकता वह आदमी को परमात्मा से कैसे जोड़ सकता है। जातिवाद ने हिन्दू राष्ट्र की सामाजिकता को पनपने नहीं दिया। हिन्दू समाज केवल विभिन्न जातियों का समूह बन गया जिनमें परस्पर केवल घृणा और ऊँच-नीच का संघर्ष था। समाज में आयी जातिवाद की रूढ़ि ने जो भयंकर परिणाम उत्पन्न किए वह इतिहास के विद्यार्थी से छिपे नहीं हैं। आज बंगाल का जो भाग कटकर अलग देश के रूप में है उसका कारण भी जातिवाद है। काली चरण और ढाका के नवाब की लड़की की प्रेमकथा आपने सुनी होगी। ब्राह्मण वर्ग ने उनके प्रेम को स्वीकार नहीं किया। तत्कालीन जड़ बुद्धि ये सोच भी नहीं सकती थी कि एक मुसलमान कन्या किसी आधार पर ब्राह्मण की पत्नी स्वीकार की जा सकती है। कालीचरण और नवाब पुत्री के साथ ब्राह्मणों ने क्रूर अमानवीय व्यवहार किया। कालीचरण को जाति से बहिष्कृत कर दिया गया। समाज से प्रताड़ित कालीचरण ने हार कर इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया। कालीचरण चटोपाध्याय से वह नवाब 'काला खान' (काला पहाड़) बन गया। काला पहाड़ ने पूर्वी बंगाल को ताकत से इस्लाम का पाठ पढ़ाया। परिणाम स्वरूप बंगाल के उस भाग में मुसलमानों का बहुमत हो गया। देश के राजनैतिक बटवारे के समय बंगाल का वह भाग पूर्वी पाकिस्तान बना। ऐसे अनेकों उदाहरण दिए जा सकते हैं, कि किस प्रकार रूढ़िवाद की वेदी पर सत्य की हत्या की गयी तथा अमानवीय अत्याचार किए गए।

जयदेव के पश्चात् संस्कृत के गीति काव्य साहित्य में उल्लेखनीय नाम पण्डित राज जगन्नाथ का है। पं.राज जगन्नाथ तैलंग ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम पेरूभट्ट था। युवावस्था में यह दिल्ली गए। दिल्ली के सिंहासन पर उस समय शाहजहाँ था। शाहजहाँ ने जगन्नाथ की काव्य प्रतिभा से प्रभावित होकर उन्हें 'पण्डित राज' की पदवी से विभूषित किया। मुगल दरबार में शायद वह कुछ दिन रहे थे।

(दिल्ली वल्लभपाणिः पल्लव तले नीतं नवीनं वयः)

एक यवन युवती इन पर आसक्त हो गई। वह स्वयं भी कवि हृदय थी। धीरे धीरे आसक्ति प्रेम फिर परिणय में बदल गयी। जब दोनों काशी आये तो अप्पय दीक्षित आदि पण्डितों ने उन्हें जाति से बहिष्कृत कर दिया। इस अपमान और दुर्व्यवहार को पण्डितराज सहन नहीं कर पाए। उन्होंन गंगा में आत्महत्या करने का निश्चय किया। गंगा में उतरने के लिए घाट की प्रत्येक सीढ़ी पर खड़े होकर उन्होंने स्तवन किया। गंगा स्तवन के वह श्लोक संस्कृत साहित्य की अमूल्य धरोहर हैं। एक-एक छन्द रचते गए और एक एक सीढ़ी उतरते गये। स्तवन करते हुए गंगा की गोद में बढ़ते गए। कहा जाता है कि उनके छन्दों से प्रसन्न होकर गंगा स्वयं बढ़ आयीं और उन्हें अंक में छिपा लिया। मित्रो, पण्डित राज गंगा में नहीं डूबे थे, समाज की जड़ता में डूबे थे। गंगा तो एक स्थूल चीज थी। उसमें तो पण्डितराज का शरीर विसर्जित हुआ था। उनका जीवन तो उसी क्षण जातीय दम्भ की वैतरिणी में डूब कर नष्ट हो गया था जिस क्षण काशी के अभिमानी पण्डित अप्पय दीक्षित आदि ने उनके लिए काशी का द्वार बन्द कर दिया था। कितना बड़ा पाप! ओह! कैसा भीषण अन्याय! समाज की इस जड़ता ने, झूठे दम्भ और अभियान की राक्षसी वृत्ति ने सरल हृदय कवि की हत्या कर दी। इस पाप को छिपाने के लिए कैसा धूर्तता का जाल बिछाया समाज के कर्ण धारों ने कि गंगा स्वयं बढ़ कर आयीं और कविराज को स्वयं अपने अंक में ले लिया? कैसा पाखण्ड है?

जिस राष्ट्र ने महाभारत काल में विदेशियों को आत्मसात् करके संस्कृति का विस्तार किया था वह इतना जड़ और संकीर्ण हो गया कि अपनों को भी नहीं सम्हाल सका। शक, हूण, किरात इत्यादि कितनी ही विदेशी जातियाँ इस संस्कृति के महासागर में लय हो गईं थीं। यह ग्रहणात्मक शक्ति जब तक जागृत रही राष्ट्र कभी भी पराजित नहीं हुआ। वह काल इसके वैभव और शक्ति का स्वर्ण काल था। किन्तु जैसे जैसे ग्रहणात्मकता घटती चली गई समाज विभिन्न वर्गों और जातियों में बंटता गया। मूल संस्कृति से कट गया और हर वर्ग ने अपने आपको दूसरों से अलग कर लिया। जातियाँ विभिन्न द्वीपखण्डों के समान हो गईं। हर जाति ने एक अलग द्वीप की भांति अपने चारों ओर, अपनी मान्यताओं और अपनी रूढ़ियों की खाई खोद ली, ऐसी खाई जिसे पार कर एक जाति का दूसरे से कम्युनिकेशन समाप्त हो गया। सम्बन्ध सूत्र टूट गया। परिणामस्वरूप राष्ट्र की वह तेजस्विता नष्ट हो गयी। जड़ता ने सामाजिक विकास को रोक दिया। सामाजिक पतन ने अन्ततोगत्वा देश के दो टुकड़े कर दिए। फिर भी आज तक इसने अपनी जड़ता को नहीं त्यागा है। इससे बढ़कर दुःख और आश्चर्य की क्या बात हो सकती है? कहने का तात्पर्य यह है कि जब समाज अपने सांस्कृतिक स्वरूप को भूल जाता है, जब अपने मूल से कट जाता है तब मर जाता है। मृत समाज, जानते हो उसकी पहचान क्या है? विकास जो जीवन का लक्षण है, उसमें नहीं होता। परिस्थिति और परिवेश के अनुरूप ढलने की क्षमता नहीं होती। उसमें गति नहीं होती और वह बीते हुए इतिहास की एक कहानी मात्र होती है। जैसे मृत व्यक्ति के अतीत को याद किया जाता है वैसे ही समाज के लोग केवल अतीत के ढोल पीटते हैं। सतयुग ऐसा था। भारत जगद्गुरु था। हम चक्रवर्ती थे। रेडियो, टेलीविजन, हवाई जहाज इनमें क्या हमारे पास नहीं था? विज्ञान में कौन हमसे आगे हो सकता है? अरे भाई ठीक है। पर क्या सर्वदा अतीत के ही गीत गाते रहोगे? हम ऐसे थे। हम वैसे थे, क्या इसका यह स्पष्ट अर्थ नहीं कि हम मर चुके हैं और अब कुछ नहीं है। संस्कृति से कटे हुए समाज की विवेक बुद्धि साधन और साध्य का अन्तर नहीं जानती। सभ्यता साधन है और संस्कृति साध्य। साध्य अपरिवर्तनशील होता है और साधन परिस्थिति के अनुसार बदलते रहते हैं। यह परिवर्तन विकास कहलाता है जो जीवित समाज का मुख्य लक्षण है। सामाजिक रूढ़िवाद क्या है? इस सम्बन्ध में मुझे एक कहानी याद आयी-

(क्रमशः)

आर्य्य लोक वार्ता

ऋत्विक्-मंडल

(प्रतिवर्ष १२०० रु. या अधिक सहयोगकर्त्ता)

माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास, ज्वालापुर, हरिद्वार, विद्यासागर फाउण्डेशन, मेरठ, अम्बिका प्रसाद एडवोकेट, लखनऊ; आनन्द कुमार आर्य, कोलकाता, श्रीमती वीना उतरेजा, राजाजीपुरम, लखनऊ; पाल प्रवीण, अलीगंज, लखनऊ, श्रीमती कमलेश पाल, अलीगंज, लखनऊ; श्रीमती वीना कटियार, फर्रूखाबाद, श्रीमती प्रमोद कुमारी, अलीगंज, लखनऊ; जगदीश खत्री, लखनऊ, ओजोमित्र शास्त्री, महावीरगंज, लखनऊ, अभिषेक, अलीगंज, लखनऊ; श्रीमती गीताजलि, अलीगंज, लखनऊ; श्रीमती मिनी स्वरूप, नई दिल्ली, कर्नल पाल प्रमोद, मेरठ, अरविन्द कुमार, आर्कीटेक्ट, लखनऊ; श्रीमती शालिनी कुमार, आर्कीटेक्ट, लखनऊ; श्रीमती नीरजा सिह, प्रधानाचार्या, टाण्डा, अम्बेडकरनगर; श्रीमती मधुर भंडारी, नई दिल्ली; रमेश चन्द्र त्यागी, लखनऊ; ओमप्रकाश सेवक, लखनऊ; प्रो.आनन्द वैद्य, लखनऊ; पीयूष गुप्त, सिंगापुर; श्री रमनलाल अग्रवाल, नजीराबाद, लखनऊ; श्रीमती प्रकाश अग्रवाल, बरेली; कृष्ण स्वरूप चौधरी, गोमती नगर, लखनऊ; श्रीमती सुन्दरी दरियानी, लखनऊ; ले.कर्नल चन्द्रमोहन गुप्त, लखनऊ; डॉ.सी.वी.पाण्डेय, सर्वोदय नगर, लखनऊ; अखिल मित्र शास्त्री, महावीरगंज, लखनऊ; श्रीमती प्रमिला पाल, मवाना, मेरठ; निशीथ कंसल, विवेकानन्दपुरी, लखनऊ; दीपक कुमार दर्शन, अमीनाबाद लखनऊ; बी.एन.टण्डन, बहराइच; अनूप टण्डन, मेरठ; श्रीमती कुसुम वर्मा, इन्दिरा नगर, लखनऊ; वेद प्रकाश बटुक, मेरठ; सतपाल महाजन, गुड़गाँव; प्रणव श्रीवास्तव, अहमदाबाद; नरेन्द्र भूषण, जानकीपुरम, लखनऊ; आर.सी.यादव, सत्या क्लीनिक, इन्दिरा नगर, लखनऊ; इ.प्रेमचद, गोविन्द विहार, लखनऊ; चौधरी रणवीर सिह, प्रधान, आर्य समाज, सीतापुर; श्रीमती मजू रेलन, गोमती नगर, लखनऊ; श्री कृष्ण सिह, अलीगंज, लखनऊ; श्रीमती मनीषा त्रिवेदी, दुबई; कौशल किशोर श्रीवास्तव, नया तिलक नगर, लखनऊ; अर्जुनदेव चढ्ढा, कोटा, राजस्थान; नरसिह पाल एडवोकेट, राजीव नगर, लखनऊ; नरदेव आर्य, एल.डी.ए.कालोनी, लखनऊ; श्रीमती मीना दीक्षित, गोमती नगर, लखनऊ; श्रीमती इन्द्रा शर्मा, डालीबाग,लखनऊ; इ.जे.पी.अग्रवाल, गायत्रीलोक, कनखल, हरिद्वार।

काव्यायन

मोदी मोदयते

❑ओजोमित्र शास्त्री विद्यावारिधि

भारतीयां संस्कृतिं प्राचीन् पुनरपि समुदाश्रयन्
सर्वमानव माङ्गल्य प्रदां भीति विवर्जिताम्।
आशास्महे वयं सर्वे सर्व सौख्यं महीतले,
आनंद लहरी प्रबला सर्व दोष प्रवाहिणी
भारतीं भारतीं कुर्यात् बहुकाल प्रवासिनीम्
यथा कौमुदी कुमुदा गगनं मोदयते मुदा
तथैव मोदी मोदेन सर्वान् मोदयते जनान्।

–आर्य समाज, अलीगंज (महावीरगंज), लखनऊ

जय भारत, जय जय मोदी!

❑डॉ. उमाशंकर शुक्ल 'शितिकंठ'

जनाक्रोश जब जगता, सिंहासन हिलते हैं।
धूल चाटती दंभी सत्ता, सौख्य-फूल खिलते हैं।
दृढ़ संकल्पी अवरोधों के सम्मुख कब झुकता है?
कहीं धर्मरथ अशिव-शक्तियों के रोके रुकता है?

अन्ध-तिमिर को चीर हुआ नव सूर्योदय है।
जननायक नरेन्द्र मोदी की जय जन-मन की जय है।
भारत के प्रधानमंत्री मोदी भविष्य की आशा।
राष्ट्र अस्मिता के विकास की स्वर्णाक्षर परिभाषा।

हिन्दू-मुस्लिम-सिख सबमें वे अपनत्व निहारें।
अनभिजात-अभिजात सभी का हित सर्वथा विचारें।
आरत की आरती करेंगे पुलकेगी माँ की गोदी।
भू-मण्डल भर में गूँजेगी जय भारत, जय जय मोदी।

कर्णधार जन-सेवी हों तब स्वप्न 'सुराज' सत्य होता।
आदृत होते जन-भाव तभी जन-हितकारी सुकृत्य होता।
अस्मिता सुरक्षा माँ-बहनों की अपना मान बढ़ाती है।
राष्ट्रोन्नति के रथ को गति दे उन्नत-शिखर चढ़ाती है।

जय धर्मरथी श्रीराम! हमारे स्वीकारो कोटिक प्रणाम।
जन-मन की आर्त्तपुकार सुनी, कृतकृत्य हुआ यह धरा-धाम।
खर-दूषण के सन्तापों से अवनी-अम्बर हुए मुक्त।
आशीष यही दो रहें सदा सन्मार्गपथी सद्भाव-युक्त।

–'वाणी निलय', 78 ट्रांसगोमती, त्रिवेणीनगर, लखनऊ

जननायक नरेन्द्र मोदी

❑गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

जन-विजय अपूर्व, शिवम् जय हो! भारत में नव अरुणोदय हो!

हे जननायक नरेन्द्र मोदी! तुमने विषतरु की जड़ खोदी।
निर्णयक्षम नेता की छवि से, सद् आकांक्षा उर में बो दी।
चहुँदिश विकास के खिले कमल, नव देशगान मंगलमय हो!

प्रतिपक्षी का छल-बल झेला, भीषण दावानल से खेला।
पग पग पर अग्निपरीक्षा दी, मिल पायी तब सुखमय बेला।
घर-घर सुराज के दीप जलें, अन्याय मुक्त-पथ निर्भय हो!

अद्भुत परिवर्तन की आँधी, कहती तुमको द्वितीय 'गाँधी'।
आशान्वित होकर जनता ने, भगवा रंग की पगड़ी बाँधी।
जग में फहराओ ध्वज-तिरंग, सम्पन्न राष्ट्र-यश अक्षय हो!

मँहगाई, भ्रष्टाचार, अनय, आतंक, प्रदूषण, भूख, अदय।
विचरण कर रहे अनेक असुर, विध्वंस करो, हो मृत्युंजय।
गौरवशाली इतिहास रचो, भारत माता गरिमामय हो!

स्थापित करो सुशासन को, पावन कर दो उच्चासन को।
विश्वास, कर्म, सद्निष्ठा से, मति-गति-यति दो शासन को।
सार्थक सुदिनों का स्वप्न करो, उज्ज्वल भविष्य आभामय हो!
भारत में नव अरुणोदय हो!

–117, आदिल नगर, पोस्ट–विकास नगर, लखनऊ–226022

आ गई मोदी लहर!

❑डॉ.मिर्ज़ा हसन नासिर

ख़त्म पतझड़ हुआ फिर ऋतु लो! वासंती आई,
बाग़ में चारों तरफ़ फूलों की ख़ुशबू छाई।

ख़ुदपरस्ती के जो आदी थे वे माली बदले,
अब नये पत्ते, नये बूटे उगेंगे भाई।

धूप में बैठे थे इस बाग़ में ये प्यासे लोग,
हर तरफ़ छा गई बदली यहाँ अब सुखदाई।

आ गई 'मोदी लहर' लोग सभी पुलकित हैं,
बाद मुद्दत के घड़ी अच्छे दिनों की आई।

सारे वादे ही निभायेंगे नये अब रहबर,
नव्य सरकार नया जोश, रवानी लाई।

बदले हालात उमीदें नई जागीं 'नासिर',
खुल गई खिड़कियाँ और रौशनी घर-घर छाई।

–जी–02, लोकपुर रेज़ीडेन्सी, न्यू हैदराबाद, लखनऊ

मोदी विराट्

❑राजा भइया गुप्ता 'राजाभ'

मोदी के व्यक्तित्व में, कुछ तो ऐसी बात।
झेले वर्षों धैर्य से, झूठे झंझावात।।

नई सोच निष्ठा सबल, तप बल जिसके पास।
गढ़े भरोसा दिलों में, हित चिन्तक बन खास।।

प्रामाणिकता सिद्ध कर, बना सुदृढ़ व्यक्तित्व।
दूरदर्शिता, लोकहित, पूरित सहज कृतित्व।।

निज बौनापन देखकर, आये मन को क्रोध।
हथकण्डे सब चुक गये, केवल शेष विरोध।।

बाधा और विरोध ने, कद को किया विराट।
बाधक हतप्रभ हो रहे, सूझे उन्हें न काट।।

आँधी औ तूफान में, उखड़ रहे हैं पाँव।
संकट में अस्तित्व है, कुन्द हुए सब दाँव।।

–बी2/356, से–ए, जानकीपुरम, लखनऊ

हर्ष-चतुष्पदी

जय पी एम मोदी!

❑बाँके बिहारी 'हर्ष'

अपनी गाड़ी अपनी लाइन,
अपनी कापी अपना साइन।
कब कैसा हो जाये चिन्तन,
और प्रभावित कर जाये मन।
सदा कदम बढ़ते ही जायें,
भले प्रलय पथ पर आ जाये।
करें प्राप्त गरिमा जो खो दी,
विश्व विजय जय पी एम मोदी!

–अवध मोटर वर्क्स, सिविल लाइन्स, फैज़ाबाद

कालजयी काव्य

नये भारत का भारत का भाग्य-पुरुष!

❑रामधारी सिंह 'दिनकर'

गावो कवियों! जयगान, कल्पना तानो,
आ रहा देवता, जो, उसको पहचानो।
है एक हाथ में परशु एक में कुश है,
आ रहा नये भारत का भाग्य पुरुष है।

गाँधी-गौतम का त्याग लिये आता है;
शंकर का शुद्ध विराग लिये आता है।
सच है, आँखों में आग लिये आता है,
पर यह स्वदेश का भाग लिये आता है।

वैराग्य छोड़ बाहों की विभा सँभालो,
चट्टानों की छाती से दूध निकालो।
है रुकी जहाँ भी धार-शिलायें तोड़ो
पीयूष चन्द्रमाओं को पकड़ निचोड़ो।

चढ़ तुंग शैल शिखरों पर सोम पियो रे!
योगियों नहीं, विजयी के सदृश जियो रे!

गरजो हिमाद्रि के शिखर, तुंग पाटों पर,
गुलमर्ग, विंध्य, पश्चिमी, पूर्व घाटों पर,
भारत-समुद्र की लहर, ज्वार-भाटों पर,
गरजो, गरजो मीनार और लाटों पर।

खंडहरों, भग्न कोटों में, प्राचीरों में,
जान्हवी, नर्मदा, यमुना के तीरों में,
कृष्णा-कछार में, कावेरी-फूलों में,
चित्तौड़-सिंहगढ़ के समीप धूलों में-

झकझोरों, झकझोरो महान् सुप्तों को;
टेरो, टेरो चाणक्य-चन्द्रगुप्तों को;
विक्रमी तेज, असि की उद्दाम प्रभा को;
राणा प्रताप, गोविन्द, शिवा सरजा को;

चिंतकों! चिंतना की तलवार गढ़ो रे!
ऋषियों! कृशानु-उद्दीपक मंत्र पढ़ो रे!
योगियों! जगो, जीवन की ओर बढ़ो रे!
बन्दूकों पर अपना आलोक मढ़ो रे!

पर्वतपति को आमूल डोलना होगा,
शंकर को ध्वंसक नयन खोलना होगा।
असि पर अशोक को मुण्ड तोलना होगा,
गौतम को जयजयकार बोलना होगा।

–'परशुराम की प्रतीक्षा' से संपादित अंश

वक्त आ गया है

❑डॉ. कैलाश निगम

सुलग जले न कहीं आँचल वसुन्धरा का
द्वार - द्वार डोल रही चेतना हमारी है।
नदियाँ विषाक्त हो न पायें, ले पियूष कुम्भ
धार - धार डोल रही चेतना हमारी है।
मानस में ग्रंथियाँ पड़ी जो स्वार्थ की हैं उन्हें
बार - बार खोल रही चेतना हमारी है।
नया इतिहास रचने का वक्त आ गया है
बार - बार बोल रही चेतना हमारी है।

–4/522, विवेक खण्ड,, गोमतीनगर, लखनऊ

मोदी-बहार

❑रमन लाल अग्रवाल

जाने दो पतझर का प्रभाव धरती तल से,
स्नेह सद्भावना के बीज अब बोने दो।
शस्य का दुकूल लहराने दो धरो के पथ,
तरुओं को नित्य नये पल्लव संजोने दो।
गाने दो असंख्य मधुपों को घूम-घूमकर,
कोकिलों के दल को न धैर्य अब खोने दो।
मालिका पिरोने दो 'रमन' नव बल्लरी को,
भूमि पर 'मोदी' की बहार अब होने दो।।

–7, नज़ीराबाद, लखनऊ

उत्तराखंड-समाचार

अर्जुन देव चढ्ढा को 'स्वामी आत्मबोध सरस्वती कर्मवीर' पुरस्कार

आर्य समाज के माध्यम से समर्पित होकर समाज सेवा करने के लिए कोटा

आर्य समाज के जिला प्रधान व प्रतिष्ठित समाज सेवी अर्जुन देव चढ्ढा को हरिद्वार ज्वालापुर स्थित वानप्रस्थाश्रम में आयोजित समारोह में 'स्वामी आत्मबोध सरस्वती कर्मवीर पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में भाग लेकर लौटे श्री राम प्रसाद याज्ञिक ने बताया कि माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास हरिद्वार द्वारा आयोजित कार्यक्रम के अध्यक्ष स्वामी दिव्यानंद सरस्वती ने अर्जुन देव चढ्ढा को शाल ओढ़ाकर न्यास के अध्यक्ष गिरधारी लाल चंदवानी ने स्मृति चिन्ह व श्रीनिवास ने श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया।

न्यास के मंत्री देवराज आर्य द्वारा तैयार किया गया श्री अर्जुनदेव चढ्ढा का अभिनन्दन पत्र उत्तराखण्ड आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान सत्यप्रकाश गुप्त ने पढ़कर सुनाया तथा सभी को प्रतियां वितरित की गईं। समारोह में अर्जुनदेव चढ्ढा को उनके मनसा, वाचा, कर्मणा के साथ मानवता की अहर्निश प्रेरणादायी व अनुकरणीय समाजसेवा के उपलक्ष्य में ट्रस्ट की ओर से पदाधिकारियों द्वारा ग्यारह हजार रुपये की नकद राशि भी भेंट की गई।

न्यास के मंत्री देवराज आर्य ने बताया कि न्यास द्वारा इस कार्यक्रम में तीन शख्सियतों जिनमें आर्य विद्वान् धर्माचार्य विश्वमित्र, मेधावी श्रीगुरुजी (विदिशा) को स्वामी धर्मानन्द विद्या मार्तण्ड आर्य भिक्षु पुरस्कार, आर्य कार्यकर्ता अर्जुनदेव चढ्ढा को स्वामी आत्मबोध कर्मवीर पुरस्कार तथा आर्य ब्रह्मचारी आचार्य कोमल कुमार (गुरुकुल आश्रम, आमसेना, ओड़िसा) को ब्रह्मचारी अखिलानन्द आर्यभिक्षु पुरस्कार से सम्मानित किया गया। समारोह में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पूर्व कुल सचिव प्रो.जयदेव विद्यालंकार, गिरधारी लाल चांदवानी, देवराज आर्य, माता रुक्मिणी आर्या, वीरेन्द्र गोयल, कोमल कुमार, डॉ.सत्यप्रकाश गुप्त, डा.श्याम सिंह आर्य, आचार्य रामकृष्ण (गुरुकुल आश्रम लखनऊ) एवं स्थानीय नागरिक उपस्थित थे। कार्यक्रम का प्रारम्भ देव यज्ञ से हुआ तथा समापन शान्तिपाठ के साथ हुआ।

सीतापुर-समाचार

काव्य संग्रह का विमोचन

अन्नपूर्णा साहित्य संगम की साप्ताहिक गोष्ठी नेहरू हाल, सीतापुर में ६ मार्च २०१४ को सम्पन्न हुई जिसमें मुख्य अतिथि जेल अधीक्षक श्री प्रमोद कुमार शुक्ला थे तथा संचालन भूपेन्द्र दीक्षित एवं अवधेश शुक्ला ने सम्मिलित रूप से किया। गोष्ठी के प्रथम चरण में आर्य लोक वार्ता के प्राचीन एवं नियमित सदस्य कविवर इं.गोपाल सागर की नव प्रकाशित पुस्तक 'लफजों का मकान' का विमोचन मुख्य अतिथि एवं मंचस्थ साहित्यकारों द्वारा किया गया। डॉ.अरुण त्रिवेदी पूर्व रीडर, शायर एवं फिल्मी गीतकार जनाब अहमद वसी, श्रीमती साफिया जमीर तथा मुख्य अतिथि श्री प्रमोद कुमार शुक्ल ने पुस्तक के बारे में अपने विचार व्यक्त किये। साहित्य संगम के अध्यक्ष श्री शांति शरण मिश्र 'व्यंग्य' ने विस्तृत समीक्षा करते हुए पुस्तक को उत्कृष्ट कृति बताते हुए उसे 'ए' श्रेणी में रखने की बात कही। उन्होंने पुस्तक के आवरण की चर्चा करते हुए उनके पुत्र इं.राजित रंजन की भी सराहना की जिसने सच्चाई, बेबसी, प्रादुर्भाव, प्रदूषण, गुनाह तथा परिणाम कविताओं एवं गजलों के भाव से मेल खाते हुए चुन चुन कर चित्र अंकित किये।

अन्त में कवि गोष्ठी सम्पन्न हुई जिसमें श्री महफूज रहमानी, नदीम सीतापुरी, महबूब गोंडवी, श्याम मनोहर श्रीवास्तव, अरुण मिश्रा, विजयलक्ष्मी मिश्रा, रामू वैश्य, श्रीमती विनोदिनी रस्तोगी, पंकज भटनागर, अम्बरीश श्रीवास्तव आदि कवियों ने अपने काव्य का पाठ किया। सभागार में श्री अनुराग श्रीवास्तव, अवनीश कुमार सिंह, पंकज पाण्डे, अरविन्द श्रीवास्तव इत्यादि उपस्थित थे। *('विनम्र')*

विचार टी.वी.

विचार टी.वी. द्वारा निर्मित वैदिक कार्यक्रमों का पिछले डेढ़ वर्ष से भी अधिक

'आर्य लोक वार्ता' मा.नरेन्द्र मोदी एवं विचार टी.वी. चेकवर्क की पूर्ण सफलता की कामना प्रकट करता है।

समय से साप्ताहिक प्रसारण आस्था चैनल पर प्रत्येक शनिवार रात्रि ६.३० बजे से एवं पिछले दस मास से दैनिक प्रसारण आस्था भजन चैनल पर रात्रि ८.०० बजे से हो रहा है। इसी शृंखला में अब विचार द्वारा निर्मित सभी कार्यक्रम अस्था चैनल पर दैनिक रूप से प्रतिदिन रात्रि ६.३० से १०.०० बजे तक प्रसारित किये जायेंगे। इन कार्यक्रमों का विवरण इस प्रकार है-

सोमवार- क्रियात्मक योगाभ्यास : आचार्य ज्ञानेश्वर जी आर्य; मंगलवार-ईशोपनिषद् : स्वमी विवेकानन्द जी परिव्राजक; बुधवार-मधुर सम्बन्धों के स्वर्णिम सूत्र : आचार्य आशीष जी आर्य; गुरुवार-व्यक्तित्व विकास : डॉ.विनय विद्यालंकार; शुक्रवार-पातंजल योग दर्शन : आचार्य सत्यप्रकाश जी; शनिवार-सोलह संस्कार : डॉ.वागीश आचार्य; रविवार-दस्तावेजी चलचित्र (डॉक्युमेण्ट्री)/लघु चित्र(शॉर्ट फिल्म)।

सभी आर्य बन्धुओं से विनम्र निवेदन है कि इसका लाभ लेवें एवं अपनी प्रतिक्रिया 'विचार' को info@vichar.tv पर अवश्य लिख भेजें। इसकी अधिक जानकारी प्राप्त करने हेतु विचार की वेबसाइट www.vichar.tv अवश्य देखें।

सीतापुर-समाचार

शान्ति यज्ञ

आर्य समाज सीतापुर से सम्बद्ध श्री हरनारायण श्रीवास्तव (७५) का निधन उनके होलीनगर स्थित आवास पर २२ .०३.१४ को हो गया। २४.०३.१४ को उनकी स्मृति में शान्तियज्ञ का आयोजन किया गया; जिसमें पारिवारिक जनों एवं नगर के गण्यमान व्यक्तियों ने भाग लिया। श्री हरनारायण अपने पीछे तीन पुत्रों का परिवार छोड़ गये हैं। आप कई वर्ष तक आर्य वीर दल सीतापुर के मंत्री भी रहे। हरनारायण जी के निधन पर वीरजी तथा श्री रघुनाथ सिंह आर्य (कानपुर) ने हार्दिक दुःख व्यक्त किया हैं। हरनारायण- श्री रघुनाथसिंह आर्य 'भाईजी' के भांजे थे।

हरदोई-समाचार

आर्य समाज संडीला

२३.०४.१४ को इन्दिरागांधी आई हास्पिटल एवं रिसर्च सेन्टर एवं आर्य समाज सण्डीला के संयुक्त तत्वावधान में नगर कल्याण समिति धर्मशाला में निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन डॉ.सत्य प्रकाश आर्य के संयोजन में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ डा.श्रीनाथ मिश्र ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया।

आर्य समाज सण्डीला द्वारा गठित बारह सदस्यों की टीम और कैम्प इंचार्ज संजय सोनकर व डा.ज्योति, डा.अंकुर ने कुल २४१ रोगियों का नेत्र परीक्षण किया जिसमें ५१ रोगियों को मातियाबंद आपरेशन की संस्तुति की गई तथा आपरेशन की तिथि ३० जून नियत की गई। २१ रोगियों को चश्मे की संस्तुति की गयी जिन्हें १६ मई को चश्मा वितरित किया गया। आर्य समाज के सदस्य एवं पदाधिकारीयों ने टीम भावना से कार्य सम्पादित किया। शशिकान्त एडवोकेट ने विशेष सहयोग दिया। कार्यक्रम के अन्त में मंत्री श्रीकान्त ने लोगों का आभार प्रकट किया। *(श्रीकान्त गुप्त, मंत्री)*

दिल्ली-समाचार

स्व.प्रियपाल की 44वीं जयन्ती

आर्य समाज मंदिर बसंत विहार नई

दिल्ली में मवाना, मेरठ के कर्मठ कर्मयोगी श्री प्रियपाल जी की ४४वीं पुण्य तिथि २४ अप्रैल २०१४ को यज्ञ सम्पन्न हुआ; जिसमें उनकी ज्येष्ठ पुत्री श्रीमती मिनी स्वरूप, ज्येष्ठ पुत्र पाल प्रवीण व छोटी पुत्री श्रीमती मधुर भण्डारी ने भाग लिया। सभी ने स्व.प्रियपाल जी के उच्च विचारों तथा जीवनादर्शों पर प्रकाश डाला।

लखनऊ-समाचार

सुन्दरम साहित्य भूषण सम्मान

सुन्दरम साहित्यिक संस्थान लखनऊ के अध्यक्ष नरेन्द्र भूषण के संयोजन तथा महामंत्री हरिमोहन वाजपेयी माधव के संचालन में आयोजित कार्यक्रम में दिनेश कुमार मिश्र स्नेही, डॉ.नरेश कात्यायन तथा डॉ.कैलाश निगम सुकवियों को सुन्दरम साहित्य भूषण सम्मान से अलंकृत किया गया। इस अवसर पर एक काव्य संध्या का भी आयोजन हुआ जिसमें घनानन्द पाण्डे 'मेघ', अनिल श्रीवास्त, प्रख्यात मिश्र, फुरकत लखीमपुरी, डॉ.अशोक शर्मा, गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र', अमृत खरे इत्यादि कवियों ने काव्यपाठ किया।

प्रधानमंत्री बनने पर मा.मोदी को बधाई

श्री नरेन्द्र मोदी को प्रचण्ड बहुमत से विजयी होने तथा प्रधानमंत्री पद ग्रहण

हेतु आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल-आसाम के प्रधान श्री आनन्द कुमार आर्य ने हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ अर्पित कीं। श्री नरेन्द्र मोदी का हार्दिक अभिनन्दन करते हुए श्री आर्य ने कहा- यह महान् गर्व का अवसर है कि श्री नरेन्द्र मोदी उसी गुजरात भूमि की उपज हैं; जहाँ से आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने स्वराज्य का संदेश दिया और आर्य सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य का संकल्प भारतीयों को प्रदान किया था। आपने विश्वास व्यक्त किया कि श्री मोदी जी महर्षि की विचारधारा का अनुसरण करते हुए पाखण्ड, ढोंग, जड़ता से देश को मुक्ति दिलाने में सफल हों।

लखनऊ-समाचार

यशोदा-स्मृति

आर्य समाज वेद मंदिर, राजाजीपुरम के प्रधान डॉ.आनन्द वर्णवाल की

सहधर्मिणी स्व.श्रीमती यशोदा वर्णवाल की पावन स्मृति में आर्य समाज मंदिर में २३.०४.१४ को यज्ञ एवं स्मृति समारोह का आयोजिन किया गया। आचार्य वेदव्रत अवस्थी ने यज्ञ की प्रक्रिया पूर्ण की, तत्पश्चात् श्री नेम प्रकाश आर्य धर्नुधर (भजनोपदेशक); आचार्य सन्तोष कुमार वेदालंकार तथा डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने दिवंगता यशोदा वर्णवाल के सद्गुणों पर प्रकाश डाला। डॉ.आनन्द वर्णवाल ने विद्वानों को सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री आर्य समाज श्री निरंजन सिंह ने किया। यशोदा वर्णवाल की स्मृति में डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने निम्नांकित छंद सुनाकर श्रद्धा सुमन अर्पित किये-

घर द्वार आंगन बुहारती संवारती थीं-
उपवन क्यारियों की, करती थीं देखभाल।।
स्वागत अतिथियों का, आगतों का सत्कार,
छोटी बात, छोटी वस्तु, रखती सदा संभाल।।
स्वाध्याय सत्संग, आनंद अनूप सदा,
घर के पड़ोसियों का,पूछती थीं हालचाल।।
धेनु पशुपक्षियों को,ममता की छाँव, माँ
यशोदा के सामन थीं-यशोदा देवी वर्णवाल।।

कार्यक्रम की विशेषता यह थी कि पूरा सभाभवन तथा परिसर आगंतुक नर नारियों से भरा हुआ था। आगंतुकों हेतु प्रीतिभोज की व्यवस्था की गई।

जीवन विकास कार्यशाला

जन जागृत सेवा समिति एवं वैदिक सेवा न्यास लखनऊ के संयुक्त तत्वावधान में एक कार्यशाला दिनांक १२ से १८ मई २०१४ तक अलीगंज, सेक्टर-डी लखनऊ में आयोजित की गई। इस कार्यशाला में श्री पवन दीक्षित (राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान), श्री राघवेन्द्र सिंह (पुलिस वायरलेस), डॉ.विशद त्रिपाठी (कार्यपालक निदेशक, इन्टरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर कान्सियसनेस स्टडीज एण्ड रिसर्च) ने भाग लिया। महिलाओं, बच्चों व नागरिकों के 'दैनिक जीवन प्रबन्धन' के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि हमारे देश की गौरवमयी संस्कृति समस्त विश्व में कितनी शिखर पर थी जिसका ह्रास गत ४००-५०० वर्षों में होता रहा। इस बात पर बल दिया गया कि वर्तमान में आधुनिक वातावरण में रहते हुए हम सभी को अपनी जीवन शैली में योग, प्राणायाम व वैदिक मंत्रों के द्वारा उन्नत, सुखद एवं शान्तिमय बनाना चाहिए।

कार्यशाला में श्री श्यामलेश प्राचार्य संस्कार भारती, श्रीमती प्रभा सिंह योगशिक्षिका, श्री आर.एस.यादव, से.नि.महाप्रबंधक, भारतीय स्टेट बैंक ने भी विचार व्यक्त किये। कार्यशाला में श्री पाल प्रवीण ने प्राणायाम की विधियाँ प्रदर्शित कीं। संचालन श्रीमती चारू श्रीवास्तव ने किया।

निष्ठा जी ने जीवन संवारा समीर का मिला सहारा

प्रख्यात वेद विदुषी डॉ.निष्ठा विद्यालंकार के जीवन में गतवर्ष एक भीषण

भूचाल आया; जिसमें उनके पति का देहान्त हो गया था। निष्ठा जी की जीवन तरणी मझधार में हिचकोले खा ही रही थी कि समीर के सहारे ने उसे किनारा दिया और उनकी जीवन की गाड़ी पुनः पटरी पर आ गई। बीते दिनों दिल्ली में वे लखनऊ के श्री समीर कुमार एडवोकेट के साथ परिणय-सूत्र में बंध गईं। 'इक साजइ इक माँजइ चहै सँवारइ फेरि' कविवर जायसी की इस उक्ति को चरितार्थता मिली। 'आर्य लोक वार्ता' की हार्दिक बधाई!

राष्ट्रीय एकता काव्य गोष्ठी

सागर संस्कृति सांस्कृतिक संस्थान, लखनऊ के तत्वावधान में राष्ट्रीय एकता काव्य गोष्ठी का आयोजन २३.०४.२०१४ को ४१७/१०, निवाजगंज, ठाकुरगंज में डॉ.मिर्ज़ा हसन नासिर की अध्यक्षता व महेश प्रसाद पाण्डेय 'महेश' के संचालन में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि थीं श्रीमती विनोदिनी रस्तोगी (सीतापुर) एवं विशिष्ट अतिथि थे अरविन्द 'असर' (दिल्ली)।

गोष्ठी का आरम्भ आभा मिश्रा द्वारा प्रस्तुत माँ शारदे के स्तवन से हुआ। तदुपरान्त सर्वश्री विश्राम सागर पाण्डेय, हरि प्रसाद मिश्र 'असीम', रमेश चन्द्र भट्ट, राम अवतार शुक्ल, रमा आर्य 'रमा', मीरा चौरसिया, अरविन्द रस्तोगी, अरविन्द 'असर', महेश पाण्डेय, विनोदिनी रस्तोगी एवं अध्यक्ष डॉ.मिर्जा हसन नासिर आदि ने अपने दोहे, कुण्डलियाँ, गीत, गजल, छंद, नज्म, लोकगीत आदि छंदबद्ध रचनाओं से उपस्थित श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

लखनऊ-समाचार

आर्य समाज महावीरगंज का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज महावीरगंज (अलीगंज) लखनऊ का वार्षिक उत्सव दिनांक १८, १९, २० मई २०१४ को समारोह एवं उल्लास के वातावरण में मनाया गया। इस अवसर पर लखनऊ तथा बाहर के अनेक उपदेशकों एवं गायकों ने आकर अपने विचारों से जनता को लाभान्वित किया; जिनके नाम इस प्रकार हैं- श्रीमती डॉ. शान्तिदेव वाला, श्रीमती डॉ.अनीता मिश्र, त्रियुगीनारायण पाठक, डॉ.वेद प्रकाश आर्य, आचार्य विश्वव्रत शास्त्री, सन्तोष कुमार वेदालंकार, पं.रामलखन शुक्ल, आचार्य रामकृष्ण शास्त्री, जय प्रकाश भजनोपदेशक (ऊधमसिंह नगर), पं. सत्यप्रकाश भजनोपदेशक (पटना, बिहार), श्री सत्यप्रकाश आर्य भजनोपदेशक (बारावंकी), जलेश्वर मुनि (कानपुर), डॉ.राजेश (बारावंकी), डॉ.रामनारायण भजनोपदेशक (बारावंकी)।

उत्सव में वेद सम्मेलन, संस्कृत सम्मेलन तथा मद्य निषेध सम्मेलनों का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता पं.रामलखन शुक्ल एवं भानुप्रताप चौहान ने की। अंतिम दिवस तो अहर्निश वेद प्रचार होता रहा जिसका जन-सामान्य पर विशेष प्रभाव पड़ा। महिलाओं में श्रीमती प्रियंका एवं श्रीमती अर्चना का गायन अत्यंत मनोहारी था। कार्यक्रमों का संचालन श्री सत्यप्रकाश आचार्य बारावंकी ने किया तथा आचार्य ओजोमित्र शास्त्री, मंत्री आर्य समाज ने धन्यवाद प्रकाश किया। *(अखिलमित्र)*

पेसमेकर की सिल्वर जुबली

जो पेसमेकर श्री मदन मोहन जोशी जी को लारी कार्डियॉलोजी, लखनऊ में १९९८ में डाक्टरों ने लगाया था; उसकी अवधि १० वर्ष निर्धारित थी; बशर्ते उसे प्रतिवर्ष नियमित जाँच कराते रहें। २०१३ में जब जोशी जी पुनः हृदय चिकित्सा हेतु लारी कार्डियॉलोजी गये तो डाक्टरों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा कि यह पेसमेकर २५ वर्ष तक कैसे चला? जिस जर्मन कम्पनी का उक्त 'मेकर' बना हुआ था; नया 'पेसमेकर' लगाने हेतु कार्डियॉलोजी में जोशी जी से ७५ हजार रुपये जमा कराये गये। जर्मनी कम्पनी ने सम्पर्क करने पर कार्डियालोजी को बताया कि उक्त श्रेणी का पेसमेकर अब नहीं बनता है। किन्तु २५ वर्ष पूर्व लगाये गये पेसमेकर का इतने समय तक चलना- सिल्वर जुबली मनाने जैसा है। जोशी जी को प्रशस्ति पत्र के साथ ७५ हजार रुपये कार्डियॉलोजी केन्द्र ने वापस कर दिये। जोशी जी स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं। यह है जोशी जी की कर्मठता, नियमित जीवन का चमत्कार। 'जीवेम शरदः शतम्' हमारी जोशी जी के प्रति यही कामना है।

लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड

आर्य समाज आदर्श नगर ने दिनांक ०४.०५.१४ को साप्ताहिक अधिवेशन के अवसर पर पूर्व प्रधान श्री मदन मोहन को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड (आजीवन प्रतिष्ठा सम्मान) प्रदान किया गया। वक्ताओं ने जोशी जी के कार्यों की सराहना की तथा उन्हें आर्य समाज आदर्श नगर के निर्माता के रूप में निरूपित किया। *(सतीश निझावन)*

मंच से गिरकर घायल हुए

जनहित में कष्ट उठाकर उफ न करने वाले लोग आज भी मौजूद हैं। पर्यावरण सुधार संबन्धी कार्यक्रमों से जुड़े श्री विनय सिंह कटियार, डी-३७, अलीगंज, लखनऊ उन्हीं में से एक हैं। घटना है २७ अप्रैल २०१४ की, जब सुरभि लान्स, सीतापुर रोड पर आयोजित सरदार वल्लभभाई पटेल स्मृति समारोह को मा.राजनाथ सिंह, भाजपा अध्यक्ष सम्बोधित करने वाले थे। लखनऊ के कतिपय जन प्रतिनिधि भी राजनाथ सिंह के स्वागतार्थ आमंत्रित थे। मंच पर प्रख्यात नेता श्री विनय कटियार, फैजाबाद, कौशलेन्द्र सिंह पूर्व मेयर वाराणसी तथा लखनऊ के महापौर डॉ.दिनेश शर्मा इत्यादि नेतागण मौजूद थे। पीछे बिना किसी सपोर्ट के बने हुए मंच से ५ फीट नीचे जमीन पर अचानक श्री विनय सिंह गिर गये। फिर भी उठकर उन्होंने श्री राजनाथ सिंह को माल्यार्पण किया।

घर आने पर पता चला कि पैर मे फ्रैक्चर हो गया है। लगभग १ मास प्लास्टर चढ़ा। विनय सिंह गंभीर प्रकृति के व्यक्ति हैं, उन्होंने किसी से चर्चा तक नहीं की। समाज सेवी पाल प्रवीण द्वारा सम्पादक आर्य लोक वार्ता को इस घटना की जानकारी मिली। क्या मंच बनाने में अधिक सावधानी नहीं बरतनी चाहिए थी? क्या श्री विनय सिंह के प्रति सहानुभूति के दो शब्द पहुँचाना भाजपा नेताओं का कर्तव्य नहीं बन जाता है?

भाषा उत्सव एवं संगोष्ठी

भारतीय भाषा प्रतिष्ठापन राष्ट्रीय परिषद शाखा उ.प्र. लखनऊ के वार्षिक समारोह के अवसर पर २३ मार्च २०१४ उत्सव एवं संगोष्ठी का आयोजन भारतीय भाषा प्रतिष्ठापन राष्ट्रीय परिषद शाखा उ.प्र., उ.प्र.भाषा संस्थान एवं वीरबल साहनी पुरावनस्पति विज्ञान संस्थान लखनऊ के संयुक्त तत्वावधान में वीरबल साहनी के सभागार में किया गया। समारोह का प्रारम्भ परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रामेश्वर दयाल गोयल, प्रदेश अध्यक्ष श्री महेश चन्द्र द्विवेदी एवं प्रो.सुनील बाजपेयी ने दीप प्रज्ज्वलन कर किया। तत्पश्चात् वैदिक राष्ट्रीय प्रार्थना गायन श्री नवनीत निगम एवं निशांत निगम द्वारा किया गया एवं हिन्दी भाषा गीत 'सारा हिन्दोस्तान है हिन्दी' की प्रस्तुति डॉ.मिर्जा हसन नासिर द्वारा की गई। मंचासीन सभी विद्वतजनों का हार्दिक स्वागत माल्यार्पण एवं प्रतीक चिन्ह भेंट कर किया गया। अध्यक्षता श्री महेश चन्द्र द्विवेदी द्वारा की गई। श्री रामेश्वर दयाल गोयल ने भारतीय भाषा प्रतिष्ठापन राष्ट्रीय परिषद की स्थापना एवं उद्देश्य पर प्रकाश डाला तथा परिषद द्वारा चलाई जा रही विभिन्न परियोजनाओं का सूक्ष्म परिचय दिया। *(मोहनलाल अग्रवाल)*

सम्पादक की डायरी

अमृतोत्सव दि.२०.०४.१४ : ३/६८, विशाल खण्ड, गोमती नगर में वैदिक यज्ञ का अनुष्ठान सम्पन्न हुआ। अवसर था- श्री राकेश त्यागी एडवोकेट के पिता श्री रमेश चन्द्र त्यागी, सेवानिवृत्त भृगर्भ वैज्ञानिक की ८५वीं वर्षगाँठ का। यह भी एक सुखद संयोग था कि इसी दिन श्री रमेशचन्द्र त्यागी एवं श्रीमती विद्या त्यागी (राकेश त्यागी की माताजी) की ६०वीं वैवाहिक जयन्ती भी थी। इस अवसर पर श्रीमती मालती त्यागी, प्रधानाचार्या, भारतीय विद्या भवन, गोमती नगर, श्रीमती अनिल त्यागी, कु.प्रचिता, श्रीमती कुमुद कटियार, श्रीमती रश्मि श्रीवास्तव तथा अन्य लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने अवसरोचित बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रदान कीं।

स्मृति-दिवस दि.१४.०५.१४ : श्री पं.ज्ञानेन्द्र दत्त त्रिपाठी, पूर्व प्रधान, आर्य समाज, चौक, लाजपतनगर की सहधर्मिणी स्व.श्रीमती चन्द्रकला त्रिपाठी की पुण्य स्मृति में हरदोई रोड, जनरैलगंज में यज्ञ-हवन सम्पन्न हुआ; जिसमें डॉ.अरविन्द, श्री रवीन्द्र त्रिपाठी, जितेन्द्र त्रिपाठी, शशांक त्रिपाठी, मलयज त्रिपाठी, अनामिका अवस्थी, कवयित्री रमा आर्य, श्री वी.एस.पाण्डे, डॉ.वेद प्रकाश आर्य, श्रीमती आभा, श्रीमती मिनी, श्रीमती पूनम, कु. सुष्मिता तथा श्रीशरत पाण्डे सहित अनेक पारिवारिक जनों ने चन्द्रकला जी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की तथा उकने सद्गुणों पर प्रकाश डाला।

जन्म दिवस दि.१८.०५.१४ : सीतापुर रोड, भरत नगर कालोनी में श्री शशांक त्रिपाठी की पुत्री कु.न्यास के जन्मदिवस के अवसर पर डॉ.वेद प्रकाश आर्य के आचार्यत्व में वैदिक यज्ञ का आयोजन सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री ज्ञानेन्द्र दत्त त्रिपाठी, डा. अरविन्द, श्री जितेन्द्र त्रिपाठी, कु.आर्ची, मलयज त्रिपाठी सहित अनक पारिवारिक जनों ने कु.न्यास के प्रति मंगलकामनाएँ अर्पित कीं।

चूड़ाकर्म संस्कार दि.१२.०५.१४ : ६/२७३, विनीत खण्ड, गोमती नगर में श्री सुबोध निगम के सुपौत्र चि.हर्षल (सुपुत्र मयंक निगम एवं श्रीमती सोनम) का चूड़ाकर्म संस्कार (मुंडन संस्कार) वैदिक विधि विधान के साथ सम्पन्न हुआ। डॉ.वेद प्रकाश आर्य के आचार्यत्व में समपन्न इस संस्कार में श्याम प्रकाश निगम, सुश्री सरोज निगम, राधा रमण निगम, सुश्री शशि निगम, यश निगम तथा श्रीमती उमा निगम, कर्नल सोम प्रकाश इत्यादि अनेक गण्यमान व्यक्तियों ने बालक को शुभाशीर्वाद प्रदान किया।

अन्नप्राशन संस्कार दि.१८.०४.१४ : डॉ.अरविन्दनाथ पाण्डे एवं श्रीमती मधु पांडे के सुपौत्र चि.सर्वज्ञ (सुपुत्र गौरव एवं प्रियंका) का अन्नप्राशन संस्कार बरौलिया, डालीगंज, मनकामेश्वर मंदिर के निकटस्थ पांडे जी के आवास पर सम्पन्न हुआ। श्री बनवारी लाल मिश्र, डॉ.अशोक कुमार दीक्षित तथा अन्य पारिवारक जनों ने चि.सर्वज्ञ को आशीर्वाद प्रदान किया। अन्नप्राशन संस्कार के महत्व पर आचार्य ने प्रकाश डाला। ज्ञातव्य है कि बालक के पिता गौरव बंगलौर के एक प्रतिष्ठान में सेवारत हैं।

शाला प्रवेश दि.०४.०५.१४ : ग्राम चतुरखेड़ा स्थित स्व.देवदत्त त्रिपाठी आयुर्वेदाचार्य की आम्रवाटिका में उनके सुपुत्र श्री ज्ञानेन्द्र दत्त त्रिपाठी द्वारा निर्मित शाला में प्रवेश यज्ञ डॉ.वेद प्रकाश आर्य के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ; जिसमें मुख्य अतिथि श्रीमती रमा आर्य एवं श्री वी.एस.पाण्डे सहित समस्त पारिवारिक जनों एवं ग्रामवासियों ने भाग लिया तथा मुख्य यजमान को शुभकामनाएँ दीं। प्रसाद वितरण एवं स्वल्पाहार की व्यवस्था की गई।

पाल प्रवीण का 78वाँ जन्म दिवस

कमलेश कुटीर, योगाश्रम, अलीगंज में प्रख्यात समाज सेवी एवं शिक्षाविद् श्री पाल प्रवीण का ७८वाँ जन्म दिवस उल्लासपूर्वक मनाया गया। डॉ.वेद प्रकाश आर्य के आचार्यत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ, जिसमें यजुर्वेद के ३६वें अध्याय से विशेष आहुतियाँ दी गईं। श्रीमती प्रमोद कुमारी, आदर्श गुप्त, आर.एस.यादव ने सुन्दर भजन सुनाये। इष्टमित्र, योगसाधकों, पारिवारिक सदस्यों तथा आर्य समाज के प्रतिनिधियों ने शुभकामनाएँ अर्पित कीं।

इस अवसर पर श्री पाल प्रवीण की सहधर्मिणी श्रीमती कमलेश पाल को 'आर्य लोक वार्ता' सम्मान से विभूषित किया गया। आ.लो.वा. के प्रधान सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने कहा- श्रीमती कमलेश के सौम्य शालीन व्यक्तित्व ने पाल प्रवीण जी को सामाजिक कार्यों में विशेष सहायता प्रदान की है तथा वैदिक सत्संग अलीगंज को भी गौरवान्वित किया है। कार्यक्रम का संयोजन श्रीमती गीतांजलि तथा अभिषेक ने किया।

मीना दीक्षित को मातृशोक

योगसाधिका श्रीमती मीना दीक्षित की धर्मपरायण सासु (श्री योगेश दीक्षित, १/३२, विपुल खण्ड, गोमती नगर की माता जी) का ८७ वर्ष की आयु में २०.०४.१४ को नोएडा में शरीरान्त हो गया। वे कुछ दिनों के लिए अपनी बेटियों के पास गई थीं; यों वह मीना जी के साथ ही रहती थीं। उनकी इच्छानुसार उनका अन्तिम संस्कार वाराणसी में किया गया। मीना जी ने अपनी सासु की जितनी लगन से सेवामुश्रूषा की वह सर्वथा सराहनीय है।

'राही' जी अस्वस्थ

प्राप्त जानकारी के अनुसार हिन्दी गीति काव्यधारा के सशक्त हस्ताक्षर श्री उमेश श्रीवास्तव 'राही' गाल ब्लाडर के ऑपरेशन के बाद स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं। ईश्वर से हमसभी उनके शीघ्र स्वास्थ्यलाभ की कामना करते हैं।

आर्य समाज आदर्शनगर

आर्य समाज आदर्शनगर का वर्ष २०१४-१५ हेतु नई कार्यकारिणी का निर्वाचन ०४.०५.१४ को कर्नल ओम प्रकाश जी के द्वारा सम्पन्न कराया गया, जिसमें निम्न पदाधिकारियों का निर्वाचन हुआ-

कर्नल ओम प्रकाश वर्मा	संरक्षक
श्री अम्बरीश कुमार अग्रवाल	प्रधान
श्री आत्मप्रकाश बत्रा	उपप्रधान
श्रीमती मधु सक्सेना	उपप्रधान
श्री सतीश निझावन	मन्त्री
श्री हरीश निझावन	उप मन्त्री
श्रीमती शृंखला आर्य	उप मन्त्री
श्री सुभाष चन्द्र	कोषाध्यक्ष
श्री वीरेन्द्र निझावन	उपकाषाध्यक्ष
श्री जितेन्द्र गुलाटी	भण्डारनायक
श्रीमती रीता गुलाटी	भण्डारनायक
डॉ.रत्नचद राय	पुस्तकाध्यक्ष
श्री सतीश चन्द्र बिसारिया	लेखा निरीक्षक

सतीश निझावन, मंत्री)

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

प्रधान संपादक
डॉ0 वेद प्रकाश आर्य
'वेदाधिष्ठान' 539क/234, हरीनगर, पो0-इन्दिरानगर, लखनऊ - 226016
9450500138

संपादक (अवैतनिक)
आलोक वीर आर्य
: 8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
अमित वीर त्रिपाठी
9795445800

संवाद प्रमुख
गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
: 9956087585

कार्यालय प्रमुख
श्रीमती सरला आर्य
: 9450500138

E-mail-
aryalokvarta@gmail.com

सहयोग राशि

सामान्य सदस्य	–	100 रु. वार्षिक
व्रती सदस्य	–	250 रु. वार्षिक
ऋत्विक् सदस्य	–	1,200 रु. वार्षिक
होता सदस्य	–	2,500 रु. वार्षिक
संरक्षक	–	12,000 रु.
प्रतिष्ठापक	–	50,000 रु.

सहयोग राशि 'बैंक ऑफ बड़ौदा' की किसी भी शाखा में 'आर्य्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है-
खाता धारक – आर्य लोक वार्ता
खाता सं. – 00500 2000 00579
खाते का प्रकार-चालू खाता
बैंक-बैंक आफ बड़ौदा, हजरतगंज लखनऊ। IFSC code - BARBOHAZARA

प्रतिष्ठापक
श्री आनन्द कुमार आर्य, कोलकाता
डॉ.(श्रीमती)वीना कटियार, फर्रूखाबाद
श्री अरविन्द कुमार आर्कीटेक्ट, लखनऊ

संरक्षक
श्री अर्जुनदेव चड्ढा, कोटा, राजस्थान
श्रीमती प्रमोद कुमारी, लखनऊ
श्रीमती शालिनी कुमार, लखनऊ
श्री कौशल किशोर श्रीवास्तव, लखनऊ
श्री जगदीश लाल खत्री, लखनऊ
श्रीमती कुसुम वर्मा, लखनऊ

परामर्श एवं सहयोग
श्री रघुनाथ सिंह आर्य, कानपुर
श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', सीतापुर
डा सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई
शिवशंकर लाल वैश्य, सीतापुर

आवश्यक सूचना

कृपया लखनऊ स्थित शिविर कार्यालय के पते का उपयोग करें-
डॉ. वेद प्रकाश आर्य,
प्रधान सम्पादक, आर्य लोक वार्ता
19 838, प्रथम तल रिंगरोड
इन्दिरा नगर, लखनऊ-226 016

मुद्रक स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी-२, हिमांशु सदन ५-पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान ५३९क/२३४ हरीनगर, रवीन्द्रपल्ली' पो इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित

ग्राम ग्राम में नगर नगर में, 'आर्य्य लोक वार्ता' घर-घर में